44Books.com

44Books.com

आदमी से प्यार कर लो

डा० वीरेन्द्र वर्मा पुस्तक-संग्रह

लेखक

जगदीश प्रसाद सक्सेना 'पंकज'

प्रकाशक

सुकृति साहित्य प्रकाशन

१०५/३ प्रेमनगर

कानपुर

44Books.com

प्रकाशक —

सुशील कुमार हजेला

सुकृति साहित्य प्रकाशन

१०५/३, प्रेमनगर,

कानपुर

प्रथम संस्करण–२०००

जून सन १९६० ई०

(सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन)

मूल्य

१ २५ नये पैसे

मुद्रक —

हरिश्चन्द्र अग्रवाल

रोहिताश्व प्रिन्टर्स, ऐशबाग रोड

लखनऊ

44Books.com

प्रकाशक —

सुशील कुमार हजेला

सुकृति साहित्य प्रकाशन

१०५/३, प्रेमनगर,

कानपुर

प्रथम संस्करण—२०००

जून सन १९६० ई०

(सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन)

मूल्य

१ २५ नये पैसे

मुद्रक —

हरिश्चन्द्र अग्रवाल

रोहिताश्व प्रिन्टर्स, ऐशबाग रोड

लखनऊ

44Books.com

समर्पण

यह उर के उद्‌गार उन्हीं को आज समर्पित करता हूँ
जो मानव हैं और जिन्हे मानवता जग मे प्यारी है

—जगदीश प्रसाद सक्सेना 'पंकज'

44Books.com

अनुक्रमणिका

आदमी से प्यार कर लो
कदम मिला के चलो
चार मुक्तक
राही कदम बढाये जा
हवा के झकोरे चला ही करेगे
विश्व-शान्ति का बिगुल बजा
युग बीत चला
वह गीत व्यर्थ है
मीत तुम गा दो ऐसा गीत
कश्मीर देगे नही
चीन को ललकार
उतना तुममे नीर नही है
दानवता चकनाचूर करो
वरदान तुझसे चाहते है
कठिन है
झल्ली वाला मजदूर
अन्धा भिखारी
ठेले वाला
मत हो निराश
भगवान, धनवान और भिखारी

44Books.com

मटका	४७
श्रम नही बेकार जाता	४९
यह कौन श्रमिक श्रम करता	५१
किसान मुसकरा रहा	५३
जीत जीवन भर यहाँ है	५५
पथ से मानी न हार	५७
जग हार बैठा	५९
बापू	६२
शाश्वत बलिदानो की जय हो	६४
तीन मुक्तक	६५
इन्सान हो तुम	६६
कवि के हृद सागर का मन्थन	६७
फिर से प्रणय गीत मै गाऊँ	७०
आँखो की मुसकान बने	७२
राग बेसुरा मत गाओ तुम	७४
श्वेत कमल सम चरण तुम्हारे	७९
दर्शन के बिन क्यो अकुलाते	८२
पलके बिछाती ही रही	८४
मनमोहन अति कारे है	८६
मनमोहन नहि कारे है	८८
आशा की गगा बहने दो	९०
अपराध क्षमा कर देना	९२
गगरी भर ले	९४
पत्थर के भगवान न माँगो	९६

44Books.com

रग ही रग है	९८
बात की बात	१०१
पिया आ गये तुझे बुलाने	१०३
होली का त्योहार प्रिये	१०५
काजल (बचपन)	१०७
(यौवन)	१०८
(वृद्धापन)	१०९
प्यार नही तो फिर क्या है	११०
हम पुकारते रहे	११२

44Books.com

आत्म निवेदन

मेरी काव्य-कला का कचन केवल तुम ही परख सकोगे
क्योंकि कसौटी इस कचन की और किसी के पास नहीं है

मै तो केवल एक श्रमिक हूँ नित श्रम की पूजा करता हूँ
गहरे उर की खान खोद कर कचन से गहने गढ़ता हूँ
मेरे श्रम का पारिश्रमिक तो केवल तुम ही बता सकोगे
क्योंकि योग्यता मूल्याकन की और किसी के पास नही है

कविता तो प्राकृतिक देन है मै गुरुजन की चरण धूल हूँ
यह मेरा सौभाग्य पक मे जन्मा फिर भी एक फूल हूँ
रसमय हूँ या मै नीरस हूँ यह निर्णय तुम ही कर सकते
क्योंकि परख इस काव्य सुमन की और किसी के पास नही है

खोटे सोने का टॉका तो लगभग हर गहने मे मिलता
लेकिन बिलकुल नकली सोना पानी पड़ते रग बदलता
इस कचन की अग्नि परीक्षा केवल तुम ही कर सकते हो
क्योंकि दहकती आग नयन की और किसी के पास नहीं है

—पंकज

44Books.com

आदमी पर सिर्फ मरता आदमी है

आदमी की पीर हरता आदमी है

आदमी से प्यार करता आदमी है

पर न जाने आदमी के भेष में तुम—

कौन हो जो प्यार को ठुकरा रहे हो ?

44Books.com

आदमी से प्यार कर लो

आदमी से प्यार कर लो
तुम अगर इन्सान हो तो आदमी से प्यार कर लो

धूप मे भी चाँदनी की तुम अगर मुसकान चाहो
पतझडो मे भी अगर तुम कोकिलो के गान चाहो
तो किसी की झोपडी मे फूल पग-पग पर बिछा कर
कण्टको से मीत अपनी सेज का शृगार कर लो
आदमी से प्यार कर लो

बोल मीठे बोल कर सारा जगत अपना बना लो
पद-दलित इन्सान को भी तुम उठा उर से लगा लो
देवता भी कर उठे पूजा तुम्हारे सद्गुणो की
तुम धरा की धूलि से भी प्यार का व्यवहार कर लो
आदमी से प्यार कर लो

पचतत्वो का खिलौना कब न जाने टूट जाये
जीव का सम्बन्ध तन से कब न जाने छूट जाये
इसलिए तूफान-आँधी से सदा सघर्ष करके
दीप माटी के जलो जल-जल सदा उपकार कर लो
आदमी से प्यार कर लो

44Books.com

कदम मिला के चलो

यह पाँच तत्व से मिल कर शरीर बनता है
विना मिले न कोई साज स्वर से बजता है
तुम्हे भी जिन्दगी का साज यदि बजाना है
तो अपने साज का सरगम सनम मिला के चलो

पहाड धूल के कण-कण से मिलके बनते है
हवा औ' पानी मे मिल कर ही घन उमडते है
महान बनना है तुमको भी यदि जमाने मे
वड़ो व छोटो से दम-दम कदम मिला के चलो

कहो न दरिया के धारे ही मिलके चलते है
जमीन, चाँद, सितारे भी मिलके चलते है
ब्रह्म के साथ सदा जीव चला है 'पकज'
तुम तो इन्सान हो हरदम कदम मिला के चलो

44Books.com

चार मुक्तक

यूँ तो ससार मे भगवान बडा होता है
निर्धनो के लिए धनवान बड़ा होता है
त्याग दे अपने सुखो को जो गरीबो के लिए
ऐसे ईमान का इन्सान वडा होता है

❀ ❀ ❀

और को तार के मल्लाह तुझे तरना है
अरे इन्सान तुझे गैर का दुख हरना है
बुरे लोगो की बुराई से तुझे क्या मतलब
फूल बन कर तुझे काँटो मे बसर करना है

❀ ❀ ❀

दुख के तूफान से इन्सान ! नही डरना है
इसी तूफान का जलयान तुझे बनना है
सीख ले गुण, अवगुण को मिटा कर इन्सान
दर्दकीकत अगर इन्सान तुझे बनना है

❀ ❀ ❀

बडा है सूर्य जो पृथ्वी के तम को हरता है
महान वह है जो छोटो का ध्यान रखता है
किसी गरीब को भूलो न अमीरी पाकर
यही वह खार है गुल जिसमे रह के पलता है

44Books.com

राही कदम बढ़ाये जा

सुख मे भी मुसकाये जा
दुख मे भी मुसकाये जा
चार दिनो का जीवन-मेला
सबको गले लगाये जा।
राही कदम बढाये जा.

उपवन के सब फूल धूप मे खिलते है
अधकार मे ही सब दीपक जलते है
रोक सके तूफान प्रलय-घन कब उनको
प्रगति-पथ पर जो हँस-हँस कर चलते है
तू भी हँस कर गाये जा
सब की व्यथा मिटाये जा
काँटो को दे हटा पथ से
सुरभित सुमन खिलाये जा
राही कदम बढाये जा.

कही डगर पर धूप कही पर छाया है
कही खिली है कली सुमन मुरझाया है
कही धूल कर रही ठठोली आँखो से

44Books.com

तू इसकी परवाह न कर
पथ के रोडो मे मत डर
जीवन-ज्योति जगाकर अपनी
पथ का निमिर मिटाये जा
राही कदम बढाये जा

कही किसी को अपनाता जग सारा है
कही किसी का कोई नही सहारा है
छिटक रही है कही चादनी पूनम की
कही अमा की रन घोर अँधियारा है
तू सुख की अभिलाष न कर
दुख मे लम्बी आह न भर
खेल समझ कर दोनो को, पर-
हित मे प्राण गँवाये जा
राही कदम बढाये जा

सुख मे सच्चा सुख न कभी मिल पायेगा
दुख मे रोया ती शरीर घुल जायेगा
तन की चूनर रँग कर सुख-दुख के रँग मे
ओढ चलेगा तो जीवन मुसकायेगा
सब से प्रीत निभाये जा
कण-कण को अपनाये जा
सत्य-शिव-सुन्दर का तू
सबको पाठ पढाये जा
राही कदम बढाये जा

44Books.com

हवा के झकोरे चला ही करेंगे

न भयभीत हो तू निशा के तिमिर से
न आँधी न पानी न आतप तिशिर से
पहुँचना अगर है तुझे लक्ष्य पर तो
न घबरा डगर में उरग के विवर से
करो मे प्रबल शक्ति भर कर चला चल
विजय की पताका लिये तू बढा चल
पथिक पथ टेटा, अभी दूर चलना
डगर बीच रोडे अडा ही करेंगे

जला ज्योति जीवन जगत जगमगा दे
शिखा प्रज्ज्वलित से प्रबल तम भगा दे
प्रभा सर्प मणि की ज्वलित हो उठे, पर
विषैले उरग के गरल को मिटा दे
भरा है रगो मे रुधिर रग जब तक
भरा देह के दीप मे स्नेह तब तक
बुझेगा न दीपक तेरी जिन्दगी का
हवा के झकोरे चला ही करेंगे

44Books.com

पथिक पथ पर गीत गाता चला चल
जो सोये है उनको जगावा चला चल
नये सूर्य की नव किरन सग हँस कर
सुमन वाटिका के खिलाता चला चल
सुने जा सभी की किये जा तू अपनी
पथिक राह सीधी चले जा तू अपनी
निडर होके गजराज सा तू चला चल
अरे श्वान मुखरित हुआ ही करेगे

यह आवागमन विश्व मे एक दुख है
जिसे सुख समझते वही घोर दुख है
दुखो से न घबरा यही साधना है
पथिक जिन्दगी मे यही एक सुख है
जगत मे सभी से भलाई किये जा
पथिक दूसरो के लिए तू जिये जा
बुराई किसी की कभी भी न करना
बुरे लोग तेरा भला ही करेगे

44Books.com

विश्व-शान्ति का बिगुल बजा

बद करो रण के बाजो को विश्व-शान्ति का बिगुल बजा

जग की तोपो को पिघला कर लौह भस्म का चूर्ण बना दो
गोली मारो इन गोलो पर अब इनको सागर मे ना दो
अणु-बम की हो चुकी परीक्षा अब इसका कुछ काम नही
इसको माटी की गागर मे भर कर भूतल मे दफना दो
विश्व-शान्ति का आज विश्व मे शोर मचा है, शोर मचा
बद करो रण के बाजो को विश्व-शान्ति का बिगुल बजा

समरभूमि का नाम न लेना अब लडने का काम नही
शान्ति! शान्ति ! ओ विश्व ! शान्ति हो, अब होना सग्राम नही
सैनिक अपने हथियारो को जी भर कर सो लेने दो
शान्ति समय मे बन्दूको औ' तलवारो का काम नही
जग-जननी के कोण-कोण मे शान्ति-सँदेशा जा पहुँचा
बद करो रण के बाजो को विश्व-शान्ति का बिगुल बजा

44Books.com

पचशील के सिद्धान्तो को पडित नेहरू ने चमकाया
देश विदेशो मे जा करके शान्ति सुधा का रस वरसाया
काँप उठा भूमण्डल सारा औ' काँपे भू राष्ट्र सभी
चाऊ-एन-लाई, बुलगानिन ने जब उसको कण्ठ लगाया
द्वेष भावनाओ को तज कर फहराओ सब एक ध्वजा
बद करो रण के बाजो को विश्व-शान्ति का विगुल बजा

अब कोई परतत्र न होगा औ' न किसी का आभारी
अब फैलेगी नही विश्व मे फिर अशान्ति की बीमारी
बडी-बडी शक्तिया बढी है विश्व-शान्ति अपनाने को
धैर्य धरो घोडा अफरीकी और काट लो निशि अँधियारी
सत्य, अहिसा और शान्ति हो बापू ने भी यही कहा
बद करो रण के बाजो को विश्व-शान्ति का बिगुल बजा

●

44Books.com

युग बीत चला

इस धरती को शीश नवा
इस की माटी के गुण गा
नभ के चाँद सितारो के
गुण गाने का युग बीत चला

दीप जला रे, दीप जला
इस धरती पर दीप जला

युगे-युगो से जिस पर सागर आश्रित है
अचल हिमालय शीश मुकुट सा शोभित है
जिसके उर मे गगा यमुना लहराती
फूलो की मालाएँ ऋतुएँ पहनाती
श्यामल गौरिक तन जिसका
जिन चरणो पर गगन झुका
उसकी पूजा करो बन्धु
अलसाने का युग बीत चला

दीप जला रे, दीप जल
इस धरती पर दीप जल

44Books.com

देख नयी हर पौद धरा पर मुसकाती
नव आशा की चूनर जिस पर लहराती
डाल-डाल पर जहाँ कोयलिया गाती है
उषा जहाँ पर नित्य सुधा बरसाती है
उस उपवन मे फूल खिला
शान्ति सृजन के बीज उगा
गुण के अकुर धरती पर
बिखराने का युग बीत चला

दीप जला रे, दीप जला
इस धरती पर दीप जला

इस धरती पर राम-कृष्ण अवतरित हुए
अगणित बार जिन्होने इसके चरण छुए
यहाँ मिटा अभिमान वीर दुशासन का
यहाँ ध्वस्त हो गया तेज-बल रावण का
यहाँ विजय का ध्वज फहरा
सत्य अहिसा को अपना
इस धरती पर गोलो के
बरसाने का युग बीत चला

दीप जला रे, दीप जला
इस धरती पर दीप जला

44Books.com

शान्ति-शान्ति चहुँ ओर धरा पर छा जाये
हर प्राणी हर राष्ट्र शान्ति को अपनाये
विप्लव के बादल न गगन मे मँडराये
द्वेष भावनाए जगती से उठ जाये
कवि ऐसा सगीत सुना
इस धरती को स्वर्ग बना
गीत पुराने बार - बार
दुहराने का युग बीत चला

दीप जला रे, दीप जल
इस धरती पर दीप जल

इस धरती को शीश नवा
इस की माटी के गुण गा
नभ के चाँद मितारो के
गुण गाने का युग बीत चला

दीप जला रे, दीप जल
इस धरती पर दीप जल

44Books.com

यह गीत व्यर्थ है

प्रगति हीन यदि गीत हुआ तो गीतकार ! वह गीत व्यर्थ है
नये प्राण फूँके न प्राण मे वह मधुरिम सगीत व्यर्थ है

गीत वही जो दानव मे भी मानवता के भाव जगा दे
गीत वही जो मानव की भी देवो से पूजा करवा दे
हेम कर तूफानो से खेले साहस से हर सकट झेले
जीवन के सघर्षो से जो मनुज हुआ भयभीत, व्यर्थ है

कला वही जो आगे कर दे पीछे पग धरने वालो को
नयी प्रेरणा नव साहस दे विघ्नो से डरने वालो को
नही कर सकी पथ दिग्दर्शन नही दुखी को त्राण दे सकी
नही किसी को जिता सकी जो विजयी ऐसी जीत व्यर्थ है

सुख मे तो सब ही मिलते है दुख मे किसने दर्द बँटाया
रहती जो प्रकाश मे साथी तम मे भग जाती वह छाया
प्राणो की पीडा पहिचाने प्रिय के दुख को अपना जाने
काम समय पर आ न सके जो 'पकज' ऐसा मीत व्यर्थ ह

44Books.com

मीत तुम गा दो ऐसा गीत

मीत तुम गा दो ऐसा गीत
कि जिसकी सुन कर मीठी तान
सभी के उर मे उपजे प्रीत
मीत तुम गा दो ऐसा गीत

विपत के बादल बदले रूप
धरा पर सुख की हो बरसात
राग मे जले दीप की ज्योति
दुखो की कटे अँधेरी रात
मनुज से मनुज करे नित प्यार
न हो इस जग मे कही अनीति
मीत तुम गा दो ऐसा गीत

शत्रु - दल तजे राग औ' द्वेष
मित्र को हो उन पर विश्वास
धूल के कण - कण मे भी आज
समा जाये फूलो की वास
शूल के साथ खिले हर फूल
प्रीत की सदा - सदा हो जीत
मीत तुम गा दो ऐसा गीत

44Books.com

विश्व की क्रोध अग्नि हो शान्त
हृदय से हृदय मिला ले पूत
एक स्वर ताल और लय एक
वदना करे शान्ति के दूत
विपत के काले बादल आज
गरज कर कर न सके भयभीत
मीत तुम गा दो ऐसा गीत

44Books.com

कश्मीर देंगे नहीं

दे सकेंगे तुम्हे प्यार मे जिन्दगी
मधुभरी किन्तु जागीर देंगे नही
क्यो न गर्दन कटे तेग की धार से
स्वर्ण की किन्तु जजीर देंगे नही
युद्ध की हर घडी धमकियाँ तुम न दो
बन्दरो की तरह घुडकियाँ तुम न दो
हम किसी भाँति कमजोर तुमसे नही
युद्ध की धमकियो से डरेंगे नही
रक्त से लाल चाहे धरा हो उठे
हिन्द का स्वर्ग कश्मीर देंगे नही
शक्ति पर दूसरो की न फूलो कभी
पाण्डवो को दु शासन न भूलो कभी
द्रौपदी का अगर चीर तुमने हरा
प्राण हरगिज तुम्हारे बचेंगे नही
तुम भले पाक दुश्मन बनो हिन्द के
सिर मुकुट मे जडा हीर देंगे नही

44Books.com

विश्व की शान्ति मे तुम न वाधक वनो
तुम अहिसक बनो, सत्य साधक बनो
साधना से भले विश्व-विजयी वनो
हम पवन दूत तुमसे लडेगे नही
किन्तु लकेश छल से सिया यदि हरी
तो तुम्हे त्राण रघुवीर देगे नही

हुस्न दामन चला प्यार का थामने
आज कश्मीर खुद हिन्द की बॉह मे
तुम मरे व्यर्थ जाते उसे देख कर
देख कर हम जियेगे, मरेगे नही
शीश-ए-दिल भले तोड दो दुश्मनो
दिल बसी किन्तु तस्वीर देगे नही

आज कश्मीर के तुम पुजारी बने
विश्व के सामने तुम भिखारी बने
मॉग लो विश्व से तुम मदद युद्ध की
युद्ध के क्षेत्र मे वे डटेगे नही
एशिया जो बढा ताल को ठोक कर
तो मदद फिर मददगीर देगे नही

●

44Books.com

चीन को ललकार

ओ चीनी मिट्टी के पुतलो !
बस खबरदार
भारत - भू पर
विप्लव के बादल मँडराने की मत सोचो
यह भाप उडायी अभी विषैली जो तुमने
वह ओस बूद के मोती बन कर गिर सकती
यदि चाहो तुम
वरना घनघोर घटाओ की इस गर्जन से
सम्पूर्ण धरा पर
धार रक्त की बरसेगी
सच कहता
भूमण्डल हिल जायेगा सारा
यदि नेत्र तीसरा खोल दिया प्रलयकर ने
ओ गर्वीले रावण चीन !
न आगे बढने का साहस अब कर
इस लक्ष्मण - रेखा के अन्दर
चहुँ दिश ज्वालाएँ धधक रही
यदि एक कदम भी आगे और बढ़ाया तो

44Books.com

हम वही हिन्दवासी जिनने कुछ वर्ष पूर्व
निज गले लगाया था तेरे हर प्राणी को
'हिन्दी चीनी भाई-भाई' के नारो से
गुजार दिया था सारे ही नभमण्डल को
अब वैर विभीषण से कर के रे लकेश्वर !
क्यो बीज बो रहा है विनाश के निज घर मे
भगवान राम की कृपा रही है सदा यहाँ
तेरा कुटुम्ब मिट जायेगा पर भारत पर
इस चिनगारी की आँच न आने पायेगी
ओ पापी दु शासन !
बल पर अपने मत अकड
तेरे जैसे अगणित दु शासन भी मिल कर
भारत की द्रुपद-सुता की लाज न हर सकते
इसकी माटी के कण-कण को विश्वास अटल
उस परमब्रह्म परमात्मा के ऊपर अब भी
भारत पर जिसने आँख उठायी फूट गयी
इतिहास उठा कर देख अगर विश्वास न हो

तू भूल गया है पचशील के नारो को
तेरी मति मद पड गयी अभिमानी
मत जगा नीद से सिह
अरे नादान चीन !
हुकार दिया यदि केवल अपना शीश उठा
तो सच कहना

44Books.com

उतना तुममें नीर नहीं है

जितना गरज रहे हो बादल उतना तुममे नीर नही है

यदि तुम पानी वाले होते तो धरती की प्यास बुझाते
आतप से पीडित इन्सानो के दुख का कुछ दर्द बँटाते
किन्तु वारिधर आसमान पर रहने लगा दिमाग तुम्हारा
जिसकी गोद पले उसके प्रति उर मे उठती पीर नही है
जितना गरज रहे हो बादल उतना तुममे नीर नही है

कभी हुई यदि पीडा होती तो औरो की पीर समझते
करुणामय होते तो सुन कर करुण कहानी रोया करते
पर-पीडा हरने के तुममे अकुर ही जब नही उगे है
तब फिर पीर हरोगे कैसे जब कोई तदबीर नही है
जितना गरज रहे हो बादल उतना तुममे नीर नही है

शान्त हृदय सागर को देखो जिसमे नीर अपार भरा है
जिसके उर मे भाँति-भाँति के रत्नो का भण्डार भरा है
तुम उसके ही धन पर फूले मँडराते फिरते हो नभ मे
आँखे दिखला कर कहते हो चुभने वाला तीर नही है
जितना गरज रहे हो बादल उतना तुममे नीर नही है

44Books.com

तेज हवा के झोके तुमको जिधर चाहते उधर नचाने
तुममे हलकापन है इसमे उछल-कूद कर शोर मचाते
तुम्हे चाहिए दुखियारी धरती के अति समीप आकर के
सुख की वर्षा करो उडाने वाला यहाँ समीर नही है
जितना गरज रहे हो बादल उतना तुममे नीर नही है

44Books.com

दानवता चकनाचूर करो

मानव के चोले मे दानव, मानव को है खाये जाता
फिर भी सीधा-सादा मानव, दानव के गुण गाये जाता

इस लोक-लाज की मर्यादा, बस बहुत हो चुकी अब हद है
दानव से बदला लेने को, मानव उर आतुर बेहद है

अब समय नही सीधेपन का, दानव न सुनेगा बातो मे
लो उठा पुन अर्जुन अपना, गाण्डीव सँभालो हाथो मे

तीरो से उसको भेद-भेद, मानवता पर मजबूर करो
मानव चोले मे दानव की दानवता चकनाचूर करो

तिलमिला उठे जब तन उसका, तीरो की तीखी पीडा से
भूखा-प्यासा जब सिहर उठे, मानवता की इस क्रीडा से

तब स्वयं समझ जायेगा वह, पर-पीडा होती दुखदाई
ज्यो प्रसव-काल की पीडा को, समझे केवल शिशु की माई

विश्राम तभी देना अर्जुन निज गाण्डीव औ' तीरो को
दानव मेटे जब मानव के हाथो की निधन लकीरो को

44Books.com

झिलमिला उठे जब दानव मे, मानवता का प्रत्येक तार
दानव मानव से मिल जाये, ज्यो गगा यमुना एक धार
ले दीपक ढूँढे इस जग मे, फिर भी न मिले कोई दानव
मिट जाये शब्द-कोश से ही, दानवता शब्द और दानव

44Books.com

वरदान तुझसे चाहते हैं

हम नही अपने लिए वरदान तुझसे चाहते है

देश के कल्याण हित यह काम आये तन हमारा
दीन दुखियो की भलाई मे लगे नित मन हमारा
सास का सरगम सदा बजता रहे उपकार मे ही
घायलो की पीर मे मुसकान तुझसे चाहते है
हम नही अपने लिए वरदान तुझसे चाहते है

ज्ञान का दीपक जला अज्ञान तम हरते रहे हम
क्रोध, माया, मोह तज कर पाप से डरते रहे हम
प्रगति-पथ से कटको को दूर कर कलियाँ बिछाये
हर पथिक के ही लिए कल्याण तुझसे चाहते हे
हम नही अपने लिए वरदान तुझसे चाहत है

हर कली फूले फले भगवान तेरी वाटिका मे
डाल, तरु, पल्लव, सुमन हो लीन तेरी ही छटा मे
शुद्ध तन मन हो सभी का हे प्रभू, हे निर्विकारी
हर हृदय मे तू विराजे दान तुझसे चाहते
हम नही अपने लिए वरदान तुझसे चाहते है

44Books.com

नित्य तेरे द्वार की साँकल बजाते ही रहे हम
आह तज कर वेदना मे मुसकराते ही रहे हम
पतझड़ो म भी यहाँ मधुमास लाये जो खुशी से
इस तरह परमार्थी इन्सान तुझमे चाहते है
हम नही अपने लिए वरदान तुझसे चाहते है

आदमी को आदमी से प्यार हो यह प्रार्थना है
हर मनुज को देश से अनुराग हो यह याचना है
शान्ति सुख की वृष्टि हो तेरी दया से इस धरा पर
दूर हो सब क्लेश यह भगवान तुझसे चाहते है
हम नही अपने लिए वरदान तुझसे चाहते है

44Books.com

कठिन है

सहस्त्रो सुमन निज हृदय से लगा कर
किये पददलित मित्र तुमने धरा पर
मगर प्यार करके किसी पददलित को
उठा कर हृदय मे लगाना कठिन है

सरल जिन्दगी मे युवक धन कमाना
कुसगत मे पड कर सरल है गॅवाना
सरल सीखना है बुरी आदतो का
मगर उनसे पीछा छुडाना कठिन है

गुणी मे अगर एक भी गुण बुरा है
निखिल सृष्टि मे वह गुणी भी बुरा है
भले चन्द्र मुख की प्रशसा करो तुम
मगर दाग उसका छुडाना कठिन है

सरल जिन्दगी मे युवक प्यार करना
सरल हाथ मे हाथ लेकर टहलना
मगर हाथ मे हाथ लेकर किसी का
युवक जिन्दगी भर निभाना कठिन है

44Books.com

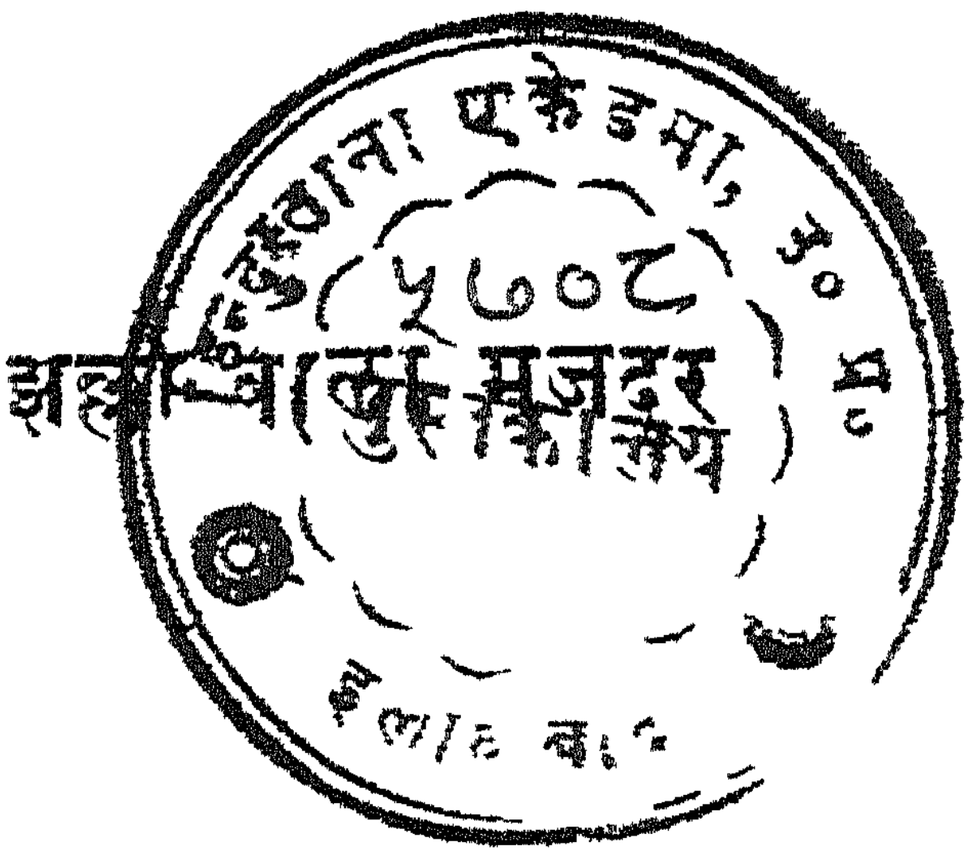

झोपड़ी और मजदूर

घोर निद्रा मे पडा वह सो रहा था
एक झल्ली मे न जाने किस तरह से
मोड कर निज गात को
सडक के फुट-पाथ पर
था लपेटे एक झीना वस्त्र तन पर
गर्भ मे माँ के पडा हो एक बालक जिस तरह से

शीत ऋतु की उस निशा मे
जब अनिल के तीव्र झोको से किसी का
काप उठता था बदन
वह विचारा एक निर्धन
एक तपसी सा बना
कर रहा था घोर तप
आसन लगाये एक मानो
युग्म घुटने पेट मे दे कह रहा हो,
इसलिए

पेट की ज्वाला प्रबल है
जो किसी को चार पैसे के लिए मजबूर कर
लाद देती जानवर के भार को मजदूर पर

44Books.com

और वह दुखिया चने के चार दानो को चबा
जी रहा था इस धरा पर भार बन कर
भार औरो का उठाने के लिए

क्योकि उसका भाग्य तो था सो गया उन मजिलो मे
नीव मे जिसकी गली थी हड्डियाँ
और जिनमे भोग करते थे सुघर तन के पुजारी
थूकते थे पान खा-खाकर उसी फुट-पाथ पर
दीन मुँह खोले पडा था मानो उनका पीकदान

सो रहा था भाग्य उसका और वह भी
किन्तु सपनो मे नही
स्वप्न मे तो वह बना था एक राजा
और यह धनवान थे दर के भिखारी
देख कर जिनको वहाँ वह कर रहा था अट्टहास
स्वप्न मे बदला चुकाने के लिए
पर उदर मे जल भर था
गति हृदय की मन्द थी
चार दिन से शेष जल के और कुछ पाया न था

इसलिए वह स्वप्न के आनन्द को
सह सका दो पल नही
रुक गयी थी मन्द गति भी उस हृदय की
सो गया था वह हमेशा के लिए उस रात को
इन्द्र ने भी जब किया था वज्रपात
हाय ! शव उसका उठाने के लिए
चार काँधे तक न कोई दे सका

44Books.com

आ गया मजदूर ही मजदूर के शव को उठाने
ले गया श्मशान तक मिट्टी जलाने के लिए
किन्तु थे उस ठौर भी ऐसे लुटेरे
अध-जली उस लाश को फिकवा दिया
कुछ इस तरफ
कुछ उस तरफ
गिद्ध, कौवो को खिलाने के लिए
क्योकि उसमे स्वार्थ था उनका भरा
मिल गयी लकडी जली कुछ अधजली
घर मे जलाने के लिए

जिन्दगी मजदूर की होती नही निज के लिए
किन्तु औरो के लिए वह कष्ट सहता जिन्दगी मे
मृत्यु के उपरान्त भी तन शेष रहता है पडा
गिद्ध, कौवो और कुत्तो के लिए

44Books.com

अन्धा भिखारी

जा रहा था एक लकडी के सहारे राह पर वह
गीत कुछ गाता हुआ
देवताओ के नही
धनवान के
क्योकि उसने गीत गाये देवताओ के सदा
पत्थरो की मूर्ति को शकर समझ कर
पर अभागे को मिला क्या पत्थरो से
नेत्र तक उस दीन के पथरा गये थे

एक पागल की तरह वह मग्न था अपने भजन मे
ध्यान था उसको न अपने तन बदन का
हड्डियो की एक माला सा बना वह
पड रहा था स्वय ही शिव के गले मे

देख कर धर्मान्धो ने यह दशा
था किया उस पर प्रहार
और बोले
पागलो की भाँति यह तो तोड देगा मूर्ति शिव की
और अपने भी बदन को फोड लेगा

44Books.com

इसलिए इसको शिवालय से निकालो शीघ्र ही
मानो शकर हो उन्ही के उस बिचारे के नही

अन्न का दाना न देखा चार दिन से उस भले ने
मर रहा था भूख की ज्वाला प्रबल से
पर न माँगा था किसी धनवान से भी
उस घडी भगवान शिव के सामने

भूख से वह तडफडा कर
दूसरे मदिर मे पहुँचा
ली शरण भगवान की
सर पटक कर रो रहा पत्थरो की मूर्ति पर
कह रहा था खोल दो शिव नेत्र अपने
पर न खोले नेत्र शकर ने कभी उसके रुदन पर
कर दिये उस दीन के भी बन्द अपनी ही तरह से

अब तो केवल एक लकडी का सहारा ही उसे था
चल दिया ससार में वह ठोकरे खाता हुआ
धनवान के गुण-गान गाने के लिए
क्योकि उससे ही स्वय रूठे हुए भगवान थे

एक धोती था लपेटे वह बदन पर
ये लगे पैबन्द जिसमे सात रँग के
लाज के कारण झुका वह जा रहा था
दूर से तन श्याम पर वह सप्त रँग की
फटी धोती इस तरह से लग रही थी

44Books.com

-जिस तरह से पड रहा हो इन्द्र धनु आकाश मे
मेघनादो को मिटाने के लिए

हाथ म टूटा कटारा एक था
एक रोटी के लिए वह रो रहा, घिघिया रहा था
उस धनी के सामने
देख कर जिमको कहा करता कभी वह
निर्धनो के रक्त का प्यासा मनुज
किन्तु उसके पॉव पडने पर विवश था आज वह
एक रोटी के लिए

पॉव छूकर भी स्वय धनवान के वह
पा रहा उनसे न कुछ था
दे रहा था वह उन्हे उल्टी दुआएँ

किन्तु हा धनवान का पत्थर हृदय तो
पत्थरो की मूर्ति से भी था कठोर
जो पिघलने को नही था लेशमात्र
चाहे शकर का हिमालय ही पिघल जाये न क्यो
दूसरी गगा बहाने के लिए

इसलिए वह छोड बैठा
गीत गाना, मॉगना औ' पॉव पडना उस धनी के
क्योकि पत्थर से बनाना मोम तो आता न था
अन्त मे वह सह सका भूख की पीडा नही
कब तलक वह सीचता जल से उदर को

44Books.com

सह सका वह शीत का जाडा नही
क्योकि उसका मोम तन पत्थर न था
इसलिए वह ठड खाकर जम गया
बन गया उन पत्थरो की भॉति पत्थर वह स्वय भी
और उसकी आत्मा मिलने चली परमात्मा से
दृश्य भूतल का दिखाने के लिए

44Books.com

ठेलेवाला

ठेले के पहियो के सँग-सँग मस्तक था उसका घूम रह
वे चूम रहे थे पृथ्वी को वह धनपति के पद चूम रह

दो समय पेट भर खाने को जो अन्न न अब तक जुटा सक
वह भार उठाता औरो का पर भार न अपना उठा सक

कैसे काटे वह दिन अपने बच्चे रोटी को रोते थ
हा एक अन्न के दाने बिन अपने प्राणो को खोते थे

गेहूँ के बोरो को लादे फिर भी खाने की तगी थी
मखमल के थानो को ढोता पर काया उसकी नगी थी

जीवन मे कठिन परिश्रम कर बेचा था उसने श्रम अपना
भूखा नगा रहना सीखा ईमान न चाहा पर तजना

बैसाख जेठ की गर्मी मे जब लू के गर्म थपेडो से
चौपाये तक व्याकुल होकर माँगते शरण थे पेडो से

वह निर्धन ठेले वाला था नगे पावो ही घूम रहा
तलवो मे बाँधे फटा टाट जो तारकोल को चम रहा

44Books.com

पैरो मे पडते थे छाले रोता जाता चिल्लाता था
पर भूख मिटाने औरो की वह लू को खाने जाता था

सब कुछ तो मिलता पैसे से पर लू मिलती बिन पैसे की
गर्मी के कारण व्याकुल था गर्मी थी उसे न पैसे की

इस पर घटो रोके रहते चौराहो पर पगड़ी वाले
निर्धन की कडी कमाई से जो पीते थे मधु के प्याले

ठेले का भाडा भी देता उनकी भी देता झोली भर
पर मन की पीडा समझाता कैसे वह किसको रो-रो कर

गर्मी, जाडा, औ' बरसाते उसकी यूँ ही कट जाती थी
पर शान्ति न मिलती थी मन को विपदाएँ नित्य सताती थी

दिन भर के कठिन परिश्रम से जब घर को वापस आता था
कुछ चने चबा पी कर पानी ठेले पर ही सो जाता था

बच्चो ने कभी नही देखी दधि, दूध, मलाई की हडियाँ
क्या यही देश है जहाँ दूध की बहती थी भू पर नदियाँ

क्यो आया धरती के ऊपर निर्धन बन कर ठेले वाला
मन का तो इतना उज्ज्वल है पर तन का है क्योकर काला

हा, झुलस गया था तन उसका सूरज की गर्मी को पाकर
मन झुलस न पाया था जिसका धनवानो की गाली खाकर

44Books.com

क्या उसके मन मे चाह न थी उसके बच्चे भी पढ जायें
वे भी ऊँचे अधिकारी हो इससे भी आगे बढ जायें

पर लिखा भाग्य मे जो होता उसका निश्चित ही होना है
छू लेता यदि वह सोने को मिट्टी मे मिलता सोना है

होली अपने अरमानो की वह नित्य जलाया करता था
वह दुखी हृदय से रो-रो कर नित फाग सुनाया करता था

जिस दिन वह लू खा जाता था खाने के लाले पड जाते
बच्चे रोटी को रोते थे चोटी मे ताले पड जाते

दो-चार दिवस मे यदि उसकी हालत कुछ ठीक न हो पाती
तो चल देता वह दुनिया से दीपक की बाती बुझ जाती

44Books.com

मत हो निराश

सो गया दिवस फिर भी कार्यालय मे बैठा
यह चित्रगुप्त सा जगता - जीता कौन अरे
जिसके ललाट पर चिन्ता की रेखाएँ है
वह सुख की रेखाओ से रीता कौन अरे

तरुणाई मे जिसकी आँखो पर ऐनक है
गालो के गड्ढे बूढा जिसे बताते है
उस नौजवान की शक्ल देख बूढे अफसर
जिसको जवान कहने मे भी सकुचाते है
जिसकी आँखे धँस गयी भूख की पीड़ा से
झुक गयी कमर जिसकी दुर्बलता के कारण
पैबद न जिसमे लगा सका हा फटा कोट
वह पलको से फाइल को सीता कौन अरे

44Books.com

जिसके केशो का रूढापन यह बतलाता
यह वृद्ध नही, दुख के सागर मे डूबा है
जिसकी साँसो के सारे स्वर झकार रहे
यह क्लर्की के दुखमय जीवन से ऊबा है
स्याही में झलक रही है जिसकी मौन व्यथा
दरकी दीवाले सुन कर जिसकी करुण कथा
जिसके अभाग्य पर रोती है निस्तब्ध निशा
वह आँखो मे हा, आँसू पीता कौन अरे

हैतरुण अभी जग मे उसने देखा ही क्या
तन पर उसके मैले कपडे जो धुले नही
सो सका नही जो क्षण भर सुख की नीद कभी
अरमानो के बिस्तर तक जिसके खुले नही
वह कितनी आशाओ को लेकर आया था
इस कार्यालय मे अपनी झोली भरने को
पर स्वप्न नही साकार कर सका जीवन के
दे पाया हा, उसको मनचीता कौन अरे

44Books.com

घिस रही कलम हो जिसकी मधुर जवानी को
वह यौवन का उन्माद भला क्या पहिचाने
जो विकसित होने से पहले ही मुरझाये
वह कली किसी भँवरे का चुम्बन क्या जाने
जो सुबह - शाम मरता - खपता हो दफ्तर मे
जिसके जीवन मे दुख की बदली छायी हो
ढरकायी हो जिसने जग मे मधु की गागर
वह विष पीकर हाकर सम जीता कौन अरे

मत पूछ अभागे से दुनिया यह किस्मत है
इस किस्मत ने दर-दर की ठोकर खायी थी
सार्टीफिकटो के बडल ले घूमा जग मे
तब कही शिफारस से यह क्लर्की पायी थी
जो आज कोढ मे खाज बनी जीवन भर को
जिसकी पीडा पर स्वय वेदना शरमायी
जो सहन नही कर सका कभी कटु बोलो को
वह घूँट पी रहा तीता-तीता कौन अरे

44Books.com

जिसके दरवाजे खडे हुए वेतन के दिन
यमदूत बने धोबी, मेहतर, नाई, कहार
बिल चुका नही पाया था उनका तब तक ही
आ गये किराया लेने को जागीरदार
आधा वेतन लुट गया वही पर क्षण भर मे
अब चार प्राणियो का किस विधि निर्वाह करे
उसके दुर्दिन पर दुनिया अश्रु बहाये क्यो
क्यो सुने कथा दुख उस पर बीता कौन अरे

होकर निराश वह चला रेल से कटने को
दीपक की ज्योति बुझाने को तूफानो मे
पर खेल रहा था जिस क्षण वह यह मृत्यु खेल
आवाज कही से आयी उसके कानो मे
"मत हो निराश असफल जीवन से कभी युवक
सघर्ष करो ले गाण्डीव औ' पाण्डु-पूत्र
है विजय तभी" यह मधुर बोल मे सुना रहा
युद्धस्थल मे डटने को मीता कौन अरे

44Books.com

भगवान, धनवान और भिखारी

वह पत्थर पर है कोमल हृद
यह कोमल - तन हृद पाषाण
दोनो की पूजा मे अविरत
जर्जर तन भूखा इन्सान

शान्त चित्त वह, यह चचल मन
वह आत्मोज्ज्वल, यह अतिचारी
स्वर्ग - नर्क दोनो के द्वारे
फैलाये निज हाथ भिखारी

वह ज्योतिमय, यह आकर्षक
वह शीतल, यह अग्नि उगलता
दोनो का मध्यस्थल बन कर
इस दुखिया का पेट :न पलता

44Books.com

एक मौन पर दयासिन्धु है
एक हठी अति ही उत्पाती
जिसकी कटु वाणी भिक्षुक के
घावो पर है विष बगराती

युगो-युगो से वह लक्ष्मीपति
यह लक्ष्मी का दास पुजारी
जग निर्माता वह जगदीश्वर
यह जग हेतु अमगल - कारी

धन के पर निकले मानव पर
फिर भी उच्च उडान न भरता
परहित महत् कर्म करने को
कभी न सत्पथ पर पग धरता

महत् कर्म के हेतु हृदय मे
प्रेम भावना प्रबल चाहिए
प्यासे को दे-दे घट मधु का
स्वय शम्भु को गरल चाहिए

यद्यपि सब के कार्य भिन्न है
पर आत्मा, मन, देह एक है
अपने-अपने पथ पर अविचल
राह अलग पर गेह एक है

44Books.com

मटका

मै मटका हूँ मै मटकाहूँ

अपना कर्तव्य निभाने को इस जग की प्यास बुझाने को
फाँसी की रस्सी डाल गले बेधडक कुएँ मे लटका हूँ
मै मटका हूँ मै मटका हूँ

मै चिकनी-चुपडी माटी का गोरा - चिट्टा सा वदन लिये
ग्वालिन के सर पर चढ जाता दधि, दूध, मलाई छाछ पिये
या पनघट की पनिहारिन की लचकीली पतली देख कमर
चट से चढ जाता गोदी मे छोटे बालक सम इठला कर
मै नगा हूँ वे पट का हू
मै मटका हूँ मै मटका हूँ

मै ठिनगा हूँ कुछ मोटा हूँ पर गर्दन मेरी पतली है
जल पीते-पीते फूल गयी यह तोद देख लो नकली है
मै निर्धन कुटिया का वासी भोजन तक मिलता नही जहाँ
इस रेफ्रीजरेटर के युग मे महलो मे मेरी चाह कहाँ
सिरमौर किसी पनघट का हूँ
मै मटका हूँ मै मटका हूँ

44Books.com

मेरा परिवार बहुत लम्बा मीनार-कुतुब का ज्यो खम्भा
कुल्हड, प्याले मेरे लडके दधि की मटकी मेरी रम्भा
है सास, ससुर, साले, सरहज पर सब मतलब के है साथी
दिन-रात दावते खाते है मटका की याद नही आती

मै अपने बल पर अटका हूँ
मै मटका हूँ मै मटका हूँ

44Books.com

श्रम नहीं बेकार जाता

श्रम नही बेकार जाता जिन्दगी मे
जिन्दगी ही श्रम बिना बेकार जाती

श्रम नही करता अगर इन्सान जग मे
भूमि पर कोई फसल उगने न पाती
कौन लाता मोड कर नहरे नदी से
इस धरा की प्यास तक बुझने न पाती
श्रम न होता तो न यह घर-द्वार होता
आदमी से क्यो किसी को प्यार होता

श्रम बिना निर्बल न रह पाता धरा पर
जिन्दगी कठिनाइयो से हार जाती

श्रम न होता तो हिमालय के शिखर पर
आज नैनीताल, मसूरी न होती
पर्वतो के प्राकृतिक यह दृश्य सुन्दर
देखने की लालसा पूरी न होती
कौन कहता झर रहे झरने वहाँ पर
कौन जा पाता भ्रमण करने वहाँ पर

44Books.com

श्रम बिना पथ बन न पाता पत्थरो पर
रेल जा पाती न मोटर-कार जाती

बुद्धि-बल विद्या न होती आदमी मे
श्रम बिना कोई न आविष्कार होता
कौन मनु सन्तान कहता आदमी को
जगली पशु की तरह व्यवहार होता
श्रम बिना बनती नही कोई कहानी
कौन करता विश्व मे आकाशवाणी

शक्ति श्रम की यदि न होती मुट्ठियो मे
सूचना कैसे कहाँ बेतार जाती

स्वर्ण रह जाता पडा भूगर्भ मे ही
श्रम बिना जग मे किसी पर धन न होता
श्रम नही करता स्वय भगवान भी तो
पच तत्वो से बना यह तन न होता
कौन कहता सृष्टि यह भगवान की है
शक्ति सारे विश्व मे इन्सान की है

गीत गाता कौन ईश्वर की प्रकृति के
प्राकृतिक छवि श्रम बिना बेकार जाती

44Books.com

यह कौन श्रमिक श्रम करता

नित सागर का मथन कर
अगणित सीपो को चुनकर
अनमोल मोतियो से जो
वसुधा की झोली भरता
यह कौन श्रमिक श्रम करता

भुजबल जिसका बलि जैसा
यह कौन पवनसुत ऐसा
जो सूरज नित्य उगलकर
रजनी के तम को हरता
यह कौन श्रमिक श्रम करता

सब नक्षत्रो का चालक
युग-युग से जग का पालक
जो सागर का जल पीकर
धन-राशि गगन से झरता
यह कौन श्रमिक श्रम करता

44Books.com

क्षण मे ब्रह्माण्ड रचाया
जड - चेतन सभी बनाया
श्रमदान सदा करने मे
पग पीछे कभी न धरता
यह कौन श्रमिक श्रम करता

श्रम ही हो जिसको प्यारा
श्रम सदा उसी से हारा
जो अपने श्रम के कारण
जग मे न किसी से डरता
यह कौन श्रमिक श्रम करता

44Books.com

किसान मुसकरा रहा

धूप ठिली खेत मे
आग लगी रेत मे
पर किसान साहसी
स्वेद की सुधा पिये
झूम-झूम मधुर-मधुर मेघराग गा रहा

झोपडी शरीर की मद-मद जल रही
धूल का धुआँ पिये जवान उम्र ढल रही
किन्तु फॉवडा लिये
ओर दिल कड़ा किये
नग्न पॉव अग्नि के अँगार चूम-चूम कर
क्यारियाँ नही लकीर भाग्य की बना रहा

गर्म-गर्म लूक के अग्निवाण चल रहे
पात-पात कह रहा प्राण से निकल रहे
किन्तु शान्ति के लिये
प्राण दान मे दिये
श्याम-तन किसान घन-श्याम को पुकार कर
अन्न नही बीज विश्व-शान्ति के उगा रहा

44Books.com

मेघराग सुन झूम - झूम घन-श्याम उठे
साथ-साथ विप्लवी तीव्र तूफान उठे
किन्तु धर्म-वाण ले
कर्म की कमान ले
कर्मठी किसान वायु गति रोक-रोक कर
नीर नही क्षीर भरी गागरे सजा रहा

नाच उठी दामिनी थिरक-थिरक छमाछम
टूट-टूट पायले रत्न गिरे चमाचम
ताल नदी नार सब
खेत भरे लबालब
किन्तु हल-बैल लिये नीर भरी झील मे
पीर भरी नाव भीग-भीग कर चला रहा

ओढनो शनील की ओढ कर धरा परी
हर्ष से विमुग्ध हो नाच उठी साँवरी
जीव जन्तु जानवर
मुग्ध हुए चर-अचर
धूल भरे गात से फूल झरे देख कर
दानवीर कर्ण सा किसान मुसकरा रहा

44Books.com

जीत जीवन भर यहाँ है

क्यो अधूरी राह पर ही रुक गये तुम आज राही
जबकि मजिल तक नही पहुचा तुम्हारा कारवॉ है

प्राण का दीपक जलाये बढ रहे थे तुम डगर पर
गर्व था पथ मे न विचलित हो सकेगा मन तुम्हारा
लाख बासन्ती बहारे मन रिझाये क्रिन्तु फिर भी
कण्टकों मे फँस न पायेगा कभी दामन तुम्हारा

आज जाने कोन मे सोन्दर्य पर तुम झुक गये हो
जबकि चरणो पर तुम्हारे झुक रहा खुद आसमाँ है

आज तक कोकिल न तन की डाल पर कूकी तुम्हारे
निश्चरी माया तुम्हे क्षण मात्र छल पायी नही
लाख नाचा मोर सावन मे निरख काली घटाये
किन्तु अधरो तक कभी मादक सुरा आयी नही

आज जाने कौन सा मधुपान कर इठला रहे तुम
जबकि पथ पर ही तुम्हारे मधु लुटाता चन्द्रमा है

44Books.com

क्या पथिक घबरा गये तुम मार्ग की कठिनाइयो से
या तुम्हारा मन भ्रमर रीझा किसी सुरभित सुमन पर
क्यो अचानक आज भीगी नयन की पलके तुम्हारी
पग न धरने दे रही आगे तुम्हारा एक पल भर

आज जाने किस नटी ने शम्भु का आसन डुलाया
जबकि उँगली पर तुम्हारे नाचता सारा जहाँ है

लक्ष्य पर पहुँचे विना ही पग पड़े डगमग तुम्हारे
विश्व के कल्याण मे यह नीति तो अच्छी नही है
फँस गये यदि मोह माया जाल मे ससार के तुम
जग हँसेगा पथिक कह कर प्रीत यह सच्ची नही है

इसलिए कर लो प्रथम उद्देश्य अपना पूर्ण जग मे
हार होगी दो घडी की जीत जीवन भर यहाँ है

44Books.com

पंथ से मानी न हार

सच वताओ मेरे साथी
रुक गये क्यो चलते-चलते
क्या स्वय पथ हार बैठा आज तुमसे
या तुम्ही ने हार मानी चलते-चलते

जिन सुखो की कामना कर
अन्य साथी चल रहे है
मार्ग पर अति मुग्ध होकर
आज तुमने उस डगर की
चाल क्यो छोडी अचानक
क्या पथिक भयभीत हो तुम
मार्ग की कठिनाइयो से
या स्वय भयभीत होकर
पथ तुमसे हार बैठा
रुक गया कह कर
पथिक ! आगे बढो मत
बस यही है अन्त मेरा
और तुम भी रुक गये होकर विवश

44Books.com

क्योकि सागर की कठिन गहराइयो का पथ टेढा
जा नही सकते जहाँ सबल बिना तुम
यह समस्या तो विकट है
जानते है अन्य साथी
किन्तु फिर भी चल रहे है
मार्ग पर निज लक्ष्य लेकर
औ' तुम्हारा ही पथिक वे अनुकरण कर
जा रहे है जीतने को पथ से
क्योकि युग-युग से पथिक ने
पथ से मानी न हार

44Books.com

जग हार बैठा

कल तलक मैंने जगत से हार मानी
आज मुझसे ही स्वय जग हार बैठा

मैं पवन से रात दिन लडता रहा
वर्तिका सम दीप की जलता रहा
बुझ न पाया जिन्दगी का जब दिया
देख कर साहस पवन तक हार बैठा
आज मुझसे ही स्वय जग हार बैठा

मैं हिमालय पर सदा चढता रहा
पत्थरो से मार्ग मे भिडता रहा
स्वेद से धोये चरण मैंने डगर के
देख मेरी शक्ति को पथ हार बैठा
आज मुझसे ही स्वय जग हार बैठा

44Books.com

फूल मे मधु प्राप्त करने के लिए
हर दुखी की पीर हरने के लिए
फँस गया जाकर कँटीली डालियो मे
देख मेरी प्रीत को अलि हार बैठा
आज मुझसे ही स्वय जग हार बैठा

वेदना मे मुसकराता ही रहा
फूल मुरझाये न, गाता ही रहा
दूसरो का दुख बँटा कर मै सुखी था
देख कर मुझको सुखी दुख हार बैठा
आज मुझसे ही स्वय जग हार बैठा

तोड डाली वन्धनो की वेडियाँ
और फोडी दासता की चूडियाँ
मै निहत्थे ही सदा रिपु से लडा
देख मेरी रीति को रिपु हार बैठा
आज मुझसे ही स्वय जग हार बैठा

मै अहिसा शक्ति ले पथ पर बढा
सत्य की ध्वज हाथ मे लेकर बढा
इस अहिसा सूत्र स बाँधा जगत को
देख मेरा तेज हिंसक हार बैठा
आज मुझसे ही स्वय जग हार बैठा

44Books.com

इस जगत को शान्ति का मदिर जता
ईश, ईसा एक है सबको बता
सत्य पथ निर्मित किया ससार मे
देख मेरा धर्म जन - जन हार बैठा
आज मुझसे ही स्वय जग हार बैठा

44Books.com

बापू

वह जिसका निज देशप्रेम लख अन्य देश भी गुण गाते थे
जिसके पद पकज छूने को हिमगिरि के कण उड आते थे
वह ऐसा था मनुज कि जिसकी रग-रग मे देवत्व भरा था
झुक जाता वह जिधर गगन के रवि, शशि, तारे झुक जाते थे

जिसके भुज विशाल करते थे दुखीजनो के तन पर छाया
जिसका चक्र सुदर्शन चरखा निर्बल का सबल बन आया
उस दधीच की बज्र हड्डियो मे इतना बल भरा हुआ था
स्वय मृत्यु झुक गयी चरण मे युग भी जिसको झुका न पाया

सत्य, अहिसा व्रती कि जिसने स्वतत्रता के दीप जलाये
शूल चुभाने वालो पर भी जिसने हँस कर फूल चढाये
सघर्षो से भिडा निहत्थे हाथो मे पहनी हथकडियाँ
बन्दी बनकर स्वय कि जिसने माता के बन्धन कटवाये

वह इतना था नम्र नम्रता थी जिसके चरणो की दासी
सहे दु ख पर दु ख न छायी मन पर फिर भी कभी उदासी
किन्तु हाय ! हम हत्यारो ने उस पर भी गोली बरसायी
गया स्वर्ग के धाम लौट कर पुन न आया कभी प्रवासी

44Books.com

बाल, वृद्ध औ' नवयुवको ने बापू कह कर जिसे पुकारा
ईश्वर का अवतार मान कर ईश्वर के सम जिसे निहारा
वह माटी की देह मिटी पर रूप और भी निखर गया है
मृत्यलोक मे परे शून्य मे चमक रहा तारो का तारा

आज उसी के बलिदानो की आओ जयजयकार मनाले
महामना की महामूर्ति पर धूप, दीप औ' हार चढाले
अब उसके उपदेश मार्ग दिलाने को रह गये शेष है
आओ उसी पथ पर चलकर भारत को हम स्वर्ग बनाले

44Books.com

शाश्वत बलिदानों की जय हो

जगमग-जगमग दीप जल उठे
ज्योतिर्मय हिमगिरि का आँगन
रवि, शशि, तारक, नक्षत्रो से
वसुधा अम्बर का मुखरित मन

जीवन की हर कली-कली मे
मुसकायी फिर से तरुणाई
देश हुआ स्वाधीन हमारा
जन जीवन ने ली अँगडाई

सदियो से श्रम ने कधो पर
निर्माणो का भार समेटा
हिम नग ने स्वातन्त्र्य-वधू को
आज मुदित हो भुज भर भेटा

शस्य श्यामला भारत भू का
मगलमय गौरव अक्षय हो
मुक्तिपर्व पन्द्रह अगस्त के
शाश्वत बलिदानो की जय हो

44Books.com

तीन मुक्तक

हवा के सामने आखी जली-जली न जली
चमन मे भाग्य की डाली फली-फली न फली
जो आज करना है करलो न कल की बात करो
यह साम कल को न जाने चली-चली न चली

❀ ❀ ❀

मै तेरे प्यार मे बस से क्या बन गया
खोजता था जिसे खुद पता बन गया
मेरी पूजा का इतना असर देखिए
इक पुजारी से मै देवता बन गया

❀ ❀ ❀

विरह मे दर्द जिगर औ' निगाह पीली थी
चाँद फीका था सितारो की चाल ढीली थी
यह न समझा कि यह सब भी रात भर रोये
सुबह जो उठके देखा तो जमी गीली थी

44Books.com

इन्सान हो तुम

दाग चेचक के मुहाँसे आँख कानी
स्याह रँग मोटी कमर रोती जवानी
दाँत टेढे नाक मुँह ज्यो चायदानी

बद शकल इतने मगर इन्सान हो तुम
इसलिए तुम याद मुझको आ रहे हो

44Books.com

कवि के हृद सागर का मन्थन

कवि के हृद सागर को मथकर
किसने चौदह रत्न निकाले
कौन कह रहा घट अमृत के
मैंने घट-घट कर पी डाले

दूध नही सेवन को मिलता
कामधेनु तुम कहाँ खो गयी
मस्तक मे अब शान्ति नही है
चन्द्र किरण तुम कहाँ सो गयी

अणु बम के गोलो के सम्मुख
व्यर्थ हुई घोड़े की टापे
वीर और धनुवाण नही जो
शक्ति और भुजबल को मापे

कौन ले गया शंख करो मे
जगमग मणि की ज्योति बता दो
कवि की उत्तेजित वाणी मे
गज जैसी चिंघाड़ दिखा दो

44Books.com

कहाँ गयी वारुणी गीत मे
मादकता क्यो नही झाँकती
उगल रहा कवि क्यो अगारे
जिसके भय से धरा काँपती

रम्भा जैसे मृदुल कठ को
कौन ले गया कोकिल बन कर
शकर बन कर कौन पी गया
विष का घट हर-हर हर-हर कर

निर्धन कवि रो रहा आज क्यो
निर्धनता के गीत सुना कर
छीन ले गया कौन लक्ष्मी
कवि के गृह की विष्णु बताकर

कवि की कविता मे पहले सा
हास्य नही शृगार नही अब
सूख गया फिर क्यो कर उसके
उद्गारो का कल्पवृक्ष तब

अब तो कवि के हृद सागर मे
नित तूफान उठा करते है
कविता नही भूख की ज्वाला-
से अरमान जला करते है

44Books.com

धनवन्तरि तुम कहाँ गये हो
कवि उर की धडकन तो देखो
तीव्र हो रही है दिन प्रति दिन
नाडी की फडकन तो देखो

सर्व शक्तियाँ नष्ट हो चुकी
किस ने उर मथन कर डाला
भाँति-भाँति के रत्न लूट कर
उर सागर निर्धन कर डाला

44Books.com

फिर से प्रणय गीत मैं गाऊँ

यदि मेरी उर - तन्त्री के तू तार मिला दे बाँसुरिया से
साँवरिया तेरे आँगन मे फिर से प्रणय गीत मै गाऊँ

विरह गीत गा-गा कर मैंने नयनो का काजल धो डाला
धूल मिला कर फूल हृदय का सूनी कर दी जीवन-माला
अब मुझ मे सामर्थ्य नही है जो मै गा कर गीत अकेले
पुन करूँ व्यापार प्रेम का प्रणय-पथ पर सुमन खिलाऊँ

फिर भी मेरे साथ अगर तू एक गीत भी गा दे स्वर से
तो मै तेरे बल पर अपने गीतो को फिर से दुहराऊँ

जीवन का यह फाग अकेले गाने मे आनन्द नही है
मधुर मिलन का राग विरह का इसमे कोई छन्द नही है
रोना भी तो इस दुनिया मे चार जनो के सँग ही होता
फिर मै हँस कर मधुर गीत यह बिना तुम्हारे कैसे गाऊँ

यदि मेरे तन के गोकुल मे एक बार तू रास रचा दे
तो मै कोयलिया के स्वर मे गा कर जग मे धूम मचाऊँ

44Books.com

मैंने अपने उर आँगन का कोना-कोना साफ किया है
किन्तु स्नेह से हीन वर्तिका ज्योति नहीं दे रहा दिया है
उर का मन्दिर चित्रहीन है सूना-सूना सा लगता है
किसको गूँथूँ माल और मै किसके तन पर फूल चढाऊँ

फिर भी तू अपनी प्रतिमा को स्थापित कर दे इस मदिर मे
तो मै खोयी ज्योति दीप की जीवन मे फिर से पा जाऊँ

टूटे तार नही जुड सकते ऐसी तो कुछ बात नही है
खोये मीत नही मिल सकते ऐसी भी कुछ बात नही है
शक्ति नही है मुझ मे ही जो अब इन आँधी तूफानो मे
बिन पतवार खीच कर अपनी नैया साहिल पर ले आऊँ

फिर भी अपनी चरण-धूलि के दो कण ही यदि मुझको दे दे
तो मै मथ कर भवसागर को नाव किनारे पर ले आऊँ

भाव प्रबल है अब भी इतने चन्दा को लूँ छीन गगन से
वश मे कर लूँ सभी सितारे मै अपने भावुक नर्तन से
पर धरती का स्वाभिमान ऐसा करने से रोक रहा है
झुका हुआ जो स्वय चरण पर उसको क्या नीचा दिखलाऊँ

यद्यपि तेरी शक्ति बिना मै उठा नही सकता हूँ उँगली
पर तेरी मिजराब मिले तो फिर से उर की वीणा बजाऊँ

●

44Books.com

आँखों की मुसकान बने

जो पीडा के बादल बन छाये रहते थे
वे अश्रु आज इन आँखो की मुसकान बने
जो कभी न हो पाये थे सपनो मे अपने
वे अन्त समय मे आकर जीवन - प्राण बने

दुख की सीमा कर गया पार जब मन पक्षी
तब क्षितिज समीप बजायी सुख ने शहनाई
सो गयी पीर जब अपनी ही पीडा पी कर
तब विष अमृत बन गया जिन्दगी मुसकाई

खिल गये फूल जीवन के उजडे उपवन मे
माटी के तन का कण-कण महक उठा क्षण में
अभिशाप दिया करते थे जो मुझको नित ही
वे आज इसी जीवन के हित वरदान बने

तप गया स्वर्ण जब जलते हुए अँगारो मे
तब बना गले का हार सभी ने अपनाया
पाषाण बन गया जब शरीर प्रभु चिन्तन मे
तब दिव्य ज्योति ने उर का आँगन चमकाया

44Books.com

पूजा मे अविरत रहा पुजारी जीवन भर
नित दीप जलाता रहा सुघर प्रतिमाओ पर
जो कभी न पिघले थे सुनकर हा करुण कथा
वे मन्दिर के पाषाण आज भगवान बने

44Books.com

राग बेसुरा मत गाओ तुम

राग बेसुरा मत गाओ तुम गीतकार होकर इन्सान
ऐसा गीत सुनाओ जिससे जग मे हो सबका कल्याण

तुम कहने पाषाण न पूजो मदिर मसजिद मे मत जाओ
गिरजाघर औ' गुरुद्वारो के द्वारो मे ताले लटकाओ
और अगर पूजा करना है तो खेतो की माटी पूजो
जिसकी पौदो पर पलते है जीव जन्तु सारे इन्सान

मै कहता यह बुद्धि तुम्हारी माटी तक ही क्यो सीमित है
अपने ज्ञान चक्षु तो खोलो देखो तो यह विश्व महान
इस जग की प्रत्येक वस्तु मे रूप उसी का तुम पाओगे
हृदय खोल यदि अपना देखो उसमे भी रहते भगवान

फिर क्यो कहते हो तुम साथी खेतो की माटी ही पूजो
क्यो पाषाणो को ठुकरा कर करते हो प्रभु का अपमान
इस जग की हर वस्तु पूज्य है जीवित हो या जीव विहीन
जड चेतन सब ही पर देखो छायी है प्रभु की मुसकान

44Books.com

क्या गुरुद्वारे,मदिर, मसजिद क्या गिरजाघर और शिवालय
महलो झोपडियो मे देखो होता है उसका गुणगान
पर तुम नास्तिक बनकर जग मे नास्तिकता के भाव जगाते
तुम्हे न क्षण भर शोभा देता कवि होकर छेडो यह तान

पाषाणो मे शक्ति नही है, पर वे तुमको शक्ति दिलाते
राम, कृष्ण कितने महान थे चित्र यही है भाव जगाते
दुर्भावो को लेकर जाओ तो वे तुमको भय दिखलाते
सद्भावो को देख तुम्हारे वे मन ही मन मे मुसकाते

भूल गये क्या तुम प्रह्लाद को जिसने चीटी के स्वरूप मे
जलते हुए खम्भ के ऊपर देखी थी वह मूर्ति महान
केवल उसी शक्ति को पाकर राम नाम का आराधन कर
जलते अगारो से जाकर चिपट गया बालक नादान

जीत हुई थी उस बालक की केवल राम नाम के बल पर
खम्भ हुआ था जलकर ठडा ऑच न आयी तन कोमल पर
उस खम्भे मे शक्ति नही थी पर उसने थी शक्ति दिलायी
विजय प्राप्त कर, हिरणाकश्यप का तोडा जिसने अभिमान

मनगढन्त है नही कहानी यह तो है इतिहास बताते
तैरे थे पाषाण सिन्धु मे केवल राम नाम के नाते
जिसकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तॅह तैसी
रामचरितमानस मे भी तो तुलसीदास यही है गाते

44Books.com

तुम केवल खेतो की माटी मे ही उसका रूप दिखाते
मदिर, मसजिद, गुरुद्वारो मे निज वाणी से आग लगाते
मै कहता मत सोचो क्षण भर पूज रहे हो तुम पाषाण
प्रभु के आदर्शो की पूजा मदिर मे होती श्रीमान

राम, कृष्ण, ईसा के युग मे फोटोग्राफर नही कही थे
जो उनकी तस्वीर खीच कर शीशो मे जा कर जडवाते
चित्रकार उनकी आकृति का रूप नयन मे भर कर केवल
सद्भावो का सुन्दर चित्रण पाषाणो मे थे दर्शाते

और उन्हे सम्मुख रख करके किसी शान्त एकात जगह मे
उनके गुण का चिन्तन करके मन मदिर मे ज्योति जगाते
अगणित मन भँवरे गुन-गुन कर नित प्रात गोधूलि समय मे
चरणो की रज शीश चढाने उन प्रतिमाओ पर झुक जाते

वे ही मदिर आज बने है वही पत्थरो की प्रतिमाएँ
पूज रही है युगो-युगो से जिनको अब भी दसो दिशाएँ
यदि उनकी पूजा करने से धैर्य न मिलता शान्ति न मिलती
तो मदिर श्मशान कहाते जलती जिसमे मनुज चिताएँ

आज तुम्हारे चित्र, चित्र है जो घर मे लटकाये जाते
जिनके आगे सन्तानो के प्रतिदिन शीश झुकाये जाते
और मदिरो के चित्रों को तुम बतलाते हो पाषाण
उनके आगे शीश झुकाना समझ रहे हो तुम अपमान

44Books.com

तुम कहते जिस क्षण गजनी ने तोडी थी मूर्तियाँ विशाल
अगणित मदिर ध्वस्त किये थे फोडे थे घटा घडियाल
उस क्षण वे भगवान तुम्हारे कहाँ सो रहे थे मदिर मे
पाषाणो मे शक्ति अगर थी दिखलाने जौहर तत्काल

बडी शीघ्रता मे कह डाली बिन समझे सोचे यह बात
पक्के मूर्ति विरोधी बन कर मचा रहे नाहक उत्पात
पापाणो की पूजा होती बस इतना ही सोच रहे थे
पर क्योकर किस कारण होती नही तुम्हे है यह कुछ ज्ञान

किसी लक्ष्य पर चलने का तो कुछ आधार हुआ करता है
प्यार उसी से होता जिसका कुछ आकार हुआ करता है
दुनिया के बारे मे बच्चो को भूगोल पढाने के हित
कागज के टुकडो पर चित्रित यह ससार हुआ करता है

यह पाषाण नही है ईश्वर यह उसके प्रति प्यार जगाते
सत्पथ पर चलने की जग को यह सदैव ही राह बताते
जिनके गुण वैभव की चर्चा सुना रहे अब भी इतिहास
उन्ही महादेवो की पूजा मदिर मे सब करने जाते

तुम कवि हो क्या मात शारदे की वन्दना नही हो करते
क्या अपने नयनो मे उसकी मनहर मूर्ति नही हो भरते
मत सोचो खेतो की माटी कविता - पाठ तुम्हे करवाती
यह जो कुछ तुम लिखते-पढते उसी मात का है वरदान

44Books.com

इस कारण तुम कभी न जग मे नास्तिकता के गीत सुनाओ
करो नही अपमान किसी का नही किसी को तुम ठुकराओ
दुनिया को मत भ्रम मे डालो बिन सोचे समझे इन्सान
तुम कवि हो आदर्शरूप हो सत्पथ का करते निर्माण

राग बेसुरा मत गाओ तुम गीतकार होकर इन्सान
ऐसा गीत सुनाओ जिससे जग मे हो सबका कल्याण

44Books.com

श्वेत कमल सम चरण तुम्हारे

श्वेत कमल सम चरण तुम्हारे
तज कर किसको शीश नवाऊँ
जिन चरणो की रज छूने से
मनुज पुण्य की झोली भरते
ठुकरा देती जिनको दुनिया
वे इनकी ठोकर से तरते
फिर मैं पापी जन्म-जन्म का
तन पापी मन पापी मेरा
पापो की गठरी के मल को
तुम्हे छोड किससे धुलवाऊँ

श्वेत कमल सम चरण तुम्हारे
तज कर किसको शीश नवाऊँ

44Books.com

दीन सुदामा गया शरण मे
तुमने दृगजल से पग धोये
उर की व्यथा जान ली तुमने
जाग गये सब सपने सोये
एक बन गया राजा क्षण मे
केवल तव दर्शन करने से
फिर मै ऐसा द्वार छोड कर
किसके आगे कर फैलाऊँ
श्वेत कमल सम चरण तुम्हारे
तज कर किसको शीश नवाऊँ

गीत सुनाये मैंने जग को
जग रीझा मेरे गीतो से
दूर रहा मै इस दुनिया की
छल से भरी हुई नीतो से
फिर भी मन ने शाँति न पायी
तब आया प्रभु शरण तुम्हारी
तुम्हे छोड कर अब मै अपने
उर की किसको व्यथा सुनाऊँ

श्वेत कमल सम चरण तुम्हारे
तज कर किसको शीश नवाऊँ

44Books.com

शिवरी के झूठे बेरो को
तुमने खाया प्रीति जता कर
फेक दिया था जिसे तुम्हारे
भाई ने तव आँख बचाकर
वही सजीवन बना लषण को
ममता की माया तो देखो
ऐसे प्रेम पुज प्रभु को तज
किससे जाकर नेह लगाऊँ

श्वेत कमल सम चरण तुम्हारे
तज कर किसको शीश नवाऊँ

44Books.com

दर्शन के बिन क्यों अकुलाते

यो तो मै तस्वोर तुम्हारी दिल मे देख लिया करता हूँ
पर जाने यह नयन बावरे दर्शन के बिन क्यो अकुलाते

रूप तुम्हारा रग तुम्हारा
और नयन की चितवन बाँकी
पलक मूँदते ही पा जाता
जैसे भाव उसी विधि झाँकी

अधरो का स्वागत अधरो से कर मधुपान किया करता हूँ
पर जाने चातकी अधर क्यो प्यासे के प्यासे रह जाते

चित्रकार का चित्र नही है
जो सहमा-सहमा रह जायें
यह वह मूर्ति नही पत्थर की
जो न कभी मन की सुन पाये

उर के घाव इन्ही पलको से मै तो नित्य सिया करता हूँ
पर जाने यह घाव हृदय के सूख-सूख कर क्यो हरियाते

44Books.com

सच कहता यह चलती फिरती
छाया उर की व्यथा मिटाती
पथ के रोडे हटा निरन्तर
सत्पथ पर है मुझे चलाती

इसके प्रति विश्वास अटल है इसको देख जिया करता हूँ
पर जीवन के प्राण न जाने इन प्राणो को क्यो कलपाते

यह मृगाङ्क की मधुर चाँदनी
अधकार मे आ जाती है
घूँघट का पट खोल हृदय के
आँगन मे मुसका जाती है

ज्ञान दिलाती किन्तु ज्ञान मै जग को नही दिया करता हूँ
सम्भव है तुम इसी हेतु उस चचल मन को हो भटकाते

44Books.com

पलकें बिछाती ही रही

मै तुम्हारी राह मे पलके बिछाती ही रही पर
प्राण तुम इतने निठुर जो एक पल भर को न आये

फूल के गजरे न लग पाये गले से
हाय ! कुम्हला कर करो मे रह गये
माँग मे मोती पिरोने को चुने थे
आँसुओ की बाढ मे जो बह गये

सास का सरगम मिलन के गीत गाता ही रहा पर
प्राण तुम इतने निठुर जो एक पल भर को न आये

दुख भरे गाये किसी ने गीत ऐसे
नयन का काजल सलोना धुल गया
देख काली रैन सावन की घटाएँ
प्रीति मे जूडा किसी का खुल गया

पी कहाँ है ? चातकी यह रट लगाती ही रही पर
प्राण तुम इतने निठुर जो एक पल भर को न आये

44Books.com

भाल पर बेंदी लगाने को धरी थी
पर धरा की धूल उसको खा गयी
लग न पाया पॉव ये भी हा महावर
रँग भरा प्याला हवा ढरका गयी
मैं तुम्हे आवाज दे देकर बुलाती ही रही पर
प्राण तुम इतने निठुर जो एक पल भर को न आये

किस खुशी मे झूम कर झूमर बनी थी
जो न झूमी हाय माथे पर कभी
पॉव की सहमी उँगलियाँ कह रही है
प्रीत बिन बिछुओ कुआँरी है अभी
यह करुण गाथा सितारो को सुनाती ही रही पर
प्राण तुम इतने निठुर जो एक पल भर को न आये

शुद्ध उर की भावना से अर्चना की
पर न जाने क्या कमी उसमे रही
प्रीत मे मीरा बनी थी हाय पागल
हर किसी की घात इस उर ने सही
मै तुम्हारी कीर्ति का गुणगान गाती ही रही पर
प्राण तुम इतने निठुर जो एक पल भर को न आये

44Books.com

मनमोहन अति कारे हैं

एरी बृषभानु सुता दरसन हित कान्हा के
काहे को तोरे मृगलोचन मतवारे हैं

जन्मे वे कृष्ण-पक्ष ताही सो कृष्ण भये
रसिया है याही सो रसिकन को प्यारे है
छल लीहै तोको तू सीधी औ' भोरी है
छलिया है, राधे ! घनश्याम नही बारे है

नाथो का नाग नीर यमुना को स्याह कियो
आपन परछाई वे हमहूँ पै डारे है
बातन ही बातन मे रँग डरिहै जातन को
सीधे नहि कृष्ण-प्रिया कृष्ण वे तिहारे है

माखन के चोर, चतुर, चचल अरु चाकर है
घर-घर की गइयन को हाँकत हँकवारे है
डोलत है वन-वन मधु घोलत है बातन सो
तोको गुहरावन को बसी कर धारे है

44Books.com

सखियन सँग रहस रचत नाचत नचकइयन अस
मोरन के पखन को सीसमुकुट धारे है
कारो तन पीत-वसन जोगी जम जानि परत
हरि है हरजाई फिर तोको क्यो प्यारे है

मारत है कॉकर हर ग्वालिन की गागर मे
छेडत वे राह चलत नद के दुलारे है
ऐसे है नटखट, नटनागर, नटराज नटी
काहे को तोरी फिर अँखियन के तारे है

तेरी सुदरता पै रीझो है कामदेव
तेरी छबि देख मलिन होवत शशि तारे है
तनिकहु नहि मेल मिलत तेरो नँदलाला सो
तू तो है गोरी मनमोहन अति कारे है

44Books.com

मनमोहन नहिं कारे हैं

मोरे मनमोहन को कहती क्यो कारे है
एरी सखि तोरे ही नयना कजरारे है

उनको तौ नाम सखी जग ने घनश्याम रख्यो
वे तौ जा गोकुल की अँखियन के तारे है
जसुमत के कान्हा, नँदलाल श्याम-सुदर है
कारे नहि तनिकहु सखि जग के उजियारे है

कचन सी काया सो स्वेत वसन भये
कुडल हू कानो के अरुणिम रँग धारे है
मुरली ध्वनि मधुर भई अधरन के चुम्बन सो
उनकी सुदरता लख रति-पति सब हारे है

कारो है नाग सखी जमुना जल कारो है
कारे है जिनके हिय उनको वे कारे हैं
मोरे मन-मदिर मे उनसो उजियार सखी
तोको श्रीकृष्ण कृष्ण, चद्र वे हमारे है

44Books.com

गोरे तौ गोरे औ' कारे नऊ गोरे है
लालन के लाला वृजलाल मोहि प्यारे है
नयनन मे नयन डारि देखौ सुकुमारि मखी
डोरे तक नयनन मे लाल - लाल डारे है

गोकुल की ग्वालिनियाँ उनके ही रग रँगी
गोरी है फिरहू सब कहती वे कारे है
कारे यदि होते तौ उनकी परछाई सौ
चन्द्र-वदन हमरे सखि क्यो न भये कारे है

कहते बृजभानु उन्हे गोकुल के ग्वाल-बाल
आभा सो उनकी रज-कण तक रतनारे है
मोको तौ प्रानन ते प्यारे है नन्दलाल
गोरे अति सुदर मनमोहन नहि कारे है

44Books.com

आशा की गंगा बहने दो

नेह नही है यदि दीपक मे तो फिर बाती ही जलने दो
दीप शिखा के बुझने-बुझते शायद सूर्य-किरण मिल जाये

मन के थके हुए पछी ने जिस डाली पर नीड बनाया
उसी डाल पर गरज-गरज कर मेघो ने पत्थर बरसाया
पख-हीन हो गया पखेरू फिर भी फड-फड कर उडने दो
साथ पवन के बहते-बहते शायद नन्दन - वन मिल जाये

बे मौसम पतझड ने आकर उपवन मे अगार गिराये
कलियो की मुसकान छीन ली डाल-डाल पर शूल उगाये
मधु के प्रेमी मन भँवरे को काँटो मे उलझा रहने दो
चुभन शूल की सहते-सहते शायद कही सुमन मिल जाये

पीडाओ की बाँध पोटली चला जा रहा दीन सुदामा
नगे पाँव न सर पर पगडी फटा हुआ है तन का जामा
दीन-दुखी को दीन-बन्धु से उर की पीडा तो कहने दो
करुण कहानी कहते-कहते शायद कही शरण मिल जाये

44Books.com

दो दिन नयनो मे घन उमडे दो दिन झडी लगी सावन की
चार दिनो की प्रदर्शनी मे भीग गयी तस्वीर वदन की
रँग तो बिगड गया है फिर भी धूमिल रेखाएँ रहने दो
नव रेखाएँ वनते-वनते शायद नवजीवन मिल जाये

जाने किस ज्वाला ने उर के चन्दन-वन मे आग लगा दी
अरमानो की चिता जला कर सुख की सम्पति धूल मिला दी
मरु-थल है जीवन पथ फिर भी आशा की गगा बहने दो
अगारो पर चलते-चलते शायद नील - गगन मिल जाये

लगा रहा है कोई गोते अव भी इस खारी सागर मे
कोई मार रहा है कॉकर इस तन की रीती गागर मे
रीती माखन की मटकी मे ग्वालिन को जल ही भरने दो
पनघट पर पग धरते-धरते शायद मनमोहन मिल जाये

44Books.com

अपराध क्षमा कर देना

माँ तुझसे है यही प्रार्थना
यही निवेदन यही याचना

मुझे भेज तो दिया अकेले इस विराट जग के मेले मे
भूल गयी यदि कही डगरिया तो अपराध क्षमा कर देना

सतरगी चूनर पहिना कर रूप-रग से मुझे सजाया
यह ससार ठगो का मेला यह न कभी तू ने बतलाया
भीड-भाड धक्का-मुक्की मे लाज बचाना यहाँ कठिन है
अगर कही फट गयी चुनरिया तो अपराध क्षमा कर देना

यहाँ भीड के कोलाहल मे कुछ भी नही सुनायी पडता
कुविचारो की धूल छा रही सत्पथ नही दिखायी पडता
डर है नयनो के काजल से चूनर पर कालिख लगने का
बरस पडी यदि श्याम बदरिया तो अपराध क्षमा कर देना

डगर-डगर पर खडे हुए है यहाँ रूप के चोर लुटेरे
पथ पर चलना तक दुर्लभ है घूर रहे मुझको बहुतेरे
मेरी सुदरता ही मेरे लिए बन गयी आज घातिनी
अगर कही लग गयी नजरिया तो अपराध क्षमा कर देना

44Books.com

मेले मे आने को मैया मै खुद ही तो मचल गयी थी
कई बार देखा था फिर भी मुझको इसकी सुधि न रही थी
आज लग रहा जैसे मैने यह सब कुछ सपनो मे देखा
फिर भी खुले न ज्ञान पुटरिया तो अपराध क्षमा कर देना

क्रय-विक्रय करने आयी थी गुण अवगुण का इस मेले मे
किन्तु यहाँ अवगुण ही अवगुण नाम न गुण का इस मेले मे
यद्यपि कुछ गुण की दूकाने लेकिन भाव बहुत ऊँचा है
गुण न अगर ला सके गुजरिया तो अपराध क्षमा कर देना

काम क्रोध मद मोह लोभ की लदी शीश पर गठरी भारी
इधर धूल ने उज्ज्वल तन की चूनर भी मैली कर डाली
यहाँ नही वह साबुन मिलता जिससे मन का मैल छुडाऊँ
बिना धुली रह गयी चदरिया तो अपराध क्षमा कर देना

यदि तू श्याम रग मे रँग कर पहिना देती मुझको चूनर
तो फिर इन काली रातो से कभी नही लगता मुझको डर
साहस कर मै पथ पर चलती पर ठोकर लगने का भय है
फूट गयी यदि कही गगरिया तो अपराध क्षमा कर देना

44Books.com

गगरी भर ले

रीती गागर मे माखन भर मुसकानी चल
पथ पर माखन का चोर मिलेगा ग्वालिनियाँ

सम्भव है तन पर बोझ अधिक कुछ पड जाये
पर मन का भार भरी गागर से कम होगा
यदि फूट गयी रीती गागर ही अनजाने
तो ग्वालिन तेरे दिल मे कितना गम होगा
माटी का सौदा तेज जगत के मेले मे
मन चाही गागर फिर न मिलेगी इस रँग की

इसका नवनीत जताकर प्रीत लुटाती चल
मन का मुरझाया फूल खिलेगा ग्वालिनियाँ

मत सोच कि माखन चोर चुराकर माखन को
इस भरी हुई गागर को खाली कर देगा
मत सोच कि यह नवनीत लुटाने से तेरी
रगीन गगरिया कोई पथी हर लेगा
यह सुरसरि का भडार सुखो का सागर है
जितना खर्चेगी उतना बढता जायेगा

44Books.com

इसका कचन वसुधा पर तू बिखराती चल
कण-कण माटी का चमक उठेगा ग्वालिनियाँ

पनघट की ओर न देख लगी है भीड वहाँ
जल भरने की बारी जाने कब तक आये
तब तक तू मथ कर क्षीर सिन्धु भर ले माखन
यह मटकी रीती कभी नही रहने पाये
श्रम करले ग्वालिन थोडा सा इस जीवन मे
अपनी गगरी से औरो की गगरी भर दे

हर प्राणी को तू इसका स्वाद बताती चल
चहुँ दिश धरती पर मधु बरसेगा ग्वालिनिया

44Books.com

पत्थर के भगवान न माँगो

चाँद भले ले लो पूनम का पर मुझसे तारे मत माँगो
कोहनूर के इन टुकडो से लाखो नूर बना लूँगा मै

विरहाकुल उर के साथी है केवल नील गगन के तारे
साथ - साथ हँसते - रोने है सुख-दु ख मे है यही हमारे
परछाई ले लो शरीर की पर काली राते मत माँगो
अधकार मे टेढे पथ की मजिल दूर बना लूँगा मै

नयी उमगो का मेरा शिशु दु ख के पलनो मे पलने दो
स्नेह भरा माटी का दीपक जीवन भर यो ही जलने दो
सुख सागर की निधियाँ ले लो पर मुझसे लहरे मत माँगो
तूफानो से खेल खेलने का दस्तूर बना लूँगा मै

मेरी पूजा की थाली मे मुरझायी कलियाँ रहने दो
भावुक उर को अपनी पीडा केवल भावो मे कहने दो
सोने का सिहासन ले लो पत्थर के भगवान न माँगो
उर आसन पर उन्हे बैठने को मजबूर बना लूँगा मै

44Books.com

फूल अगर प्यारे है तुमको चुन लो जीवन की डाली से
विप का प्याला छोड मुझे दो तुम पी लो मधुरस प्याली से
उपवन की हरियाली ले लो पर कॉटो का प्यार न माँगो
दामन थाम अगर यह लेगे इनको हूर बना लूँगा मै

मेरी जीवन की पुस्तक मे सुख का अर्थ दुखो का घर है
नश्वर तन के नर्क कुण्ड मे सुख से रहता जीव अमर है
तुम सुख का सुहाग ले जाओ पर दुख की दुलहन मत मागो
तन की गागर के कण-कण से फिर सिदूर बना लूँगा मै

नयनो मे उमडी वदली से चातक स्वाति बूँद ले लो तुम
पीर छोड दो इस गोकुल मे मधु ले लो बरसाने को तुम
भीगी पलको का मधुवन लो पक न तुम 'पकज' से माँगो
पक बीच खिल कर जीवन सुख से भरपूर बना लूँगा मै

44Books.com

रंग ही रंग है

वह रँग पे आये तो सँभल के
वह रँग चलाये तो सँभल के
एक मे एक यहाँ मौजूद है रँग वाले 'पकज'
वह रग दिखाये तो संभल के

रग चढता तो कभी रग उतर जाता है
रग जमता तो कभी रग उखड जाता है
रग फीका है तुम्हारा तो तुम्हे रज क्यो
रग पे आओ तो सही रग बदल जाता है

रग जमाना है तो रँगदार करो कुछ बाते
रग दिखाओ मगर ऐ दोस्त करो मत घाते
रग अच्छा है तो ससार तुम्हे चाहेगा
वरना रगीन न हो पायेगी काली राते

रोनी सूरत है अगर रँग नही सुहाता है
रँग पे होते है तभी रग उन पे आता है
रूप हो, रग हो, सूरत हो और सीरत भी
तब कही जाके यह रग, रग लाता है

44Books.com

साफ रँग के है वे, नाजुक बडे रसीले है
रँग पे चढते है नही वे बडे हठीले है
श्यामले कह के पुकारे मुझे, एतराज नही
वरना 'पकज' है गुलाबी बडे रँगीले है

रग वालो के भी अन्दाज हुआ करते है
दिल चुरा लेने दगाबाज हुआ करते है
रँग दिखाते हमे हँस करके हँसा देते है
हम दिखाते है तो नाराज हुआ करते है

रँग ही रँग है या कुछ और भी रँग है उनमे
कोरी रँगबाजी या कुछ और तरग है उनमे
रिश्तेदारी नही करना है मुझे उनसे कोई
पूछता हूँ कि कुछ और भी रँग है उनमे

रग खिलता है, जब जवानी पे रग आता है
रग खिलता है तब, जवानी पे रग छाता है
अरे तकरार यह जब तब की नही, रँग की है
दिल है रगी तो बुढापे मे रग लाता है

रग उडता है तो रगत भी बदल जाती है
रग चलता है तो तबियत भी मचल जाती है
रँग चलाओ, मगर रँग न दिखाओ मुझको
इसी रँगबाजी मे आपस में भी चल जाती है

44Books.com

गेहुआँ रँग के है दुनिया को रँग दिखाते है
खुद को रँगरेज बताने मे शरम खाते है
रँगे है होठ औ' मुँह पर भी लाल रग मले
कागजी फूल यह 'पकज' से रँग मिलाते है

भले ही रगभवन मे कोई हो रँग लाता
भले बदन मे वहाँ इत्र हो मला जाता
चाहे कितनी भी हो रगत व रगीन फिजा
बिना रगीन के महफिल मे रग नही आता

रग ऊँचा है तभी लोग उन पे मरते है
बात करते है हँसकर तो फूल झडते है
न जाने कौन से रँग पर सवार आज वो है
रँग पे चढते नही, बडे रँग से बात व रते है

यह रगमच है, रगभूमि नही, लडते क्यो
अपना-अपना है यहाँ रँग, झगडते क्यो
रँग रचाओ यहाँ रगत है अगर कुछ तुममे
रँगे सियार हो तो जाओ अकडते क्यो

44Books.com

बात की बात

किसी की बात मजेदार बहुत होती है
किसी की बात मे तकरार बहुत होती है
सोचकर और समझकर जो बात करते है
उनकी हर बात वजनदार बहुत होती है

किसी की बात किसी से कही नही जाती
किसी की बात किसी से सही नही जाती
किसी की बात मे हाँ-हाँ की झडी लगती है
किसी की बात से नही - नही, नही जाती

बात बिगडी हुई बनती नही बनाये से
बात उखडी हुई जमती नही जमाये से
बात हँस कर के करो हँस कर न सुनो
क्योकि टल जाती है बात मुस्कराये से

किसी की बात का एतबार नही होता है
किसी की बात मे कुछ सार नही होता है
व्यर्थ की बात मे बर्बाद समय जो करते
उनका कोई भी तलबगार नही होता है

44Books.com

बात इसाफ की हर दिल को पसद आती है
बात अच्छी तो भला किसको नही भाती है
बात बस उतनी करो जितनी कि जरूरत हो
बात बनती है कभी बात विगड जाती है

कभी दो कौडी की कभी हजारो की वात होती है
कभी जमीन की कभी तारो की बात होती है
बात हर किस्म की होती है जहॉ मे लेकिन
अक्ल की बात समझदारो की बात होती है

बहुत से लोग तो रॅगदार बात करते है
बहुत से लोग लचकदार बात करते है
जो अपनी बात से औरो के दिल लुभा न सके
करे न बात वे बैकार बात करते है

बातो - बातो मे रात होती है
बातो - बातो मे मात होती है
मेरी इन बातो को पत्थर की लकीरे समझो
मर्द की बात बात होती है

बात करने मे कुछ लोग तो शरमाते है
कुछ ऐसे लोग है बातो की झड लगाते है
वात करना भी एक हुनर है 'पकज'
काम लाखो के बातो मे निकल आते है

44Books.com

पिया आ गये तुझे बुलाने

कर ले निज शृगार दुल्हनियाँ पिया आ गये तुझे बुलाने

बहुत रह चुकी तू पीहर मे
अब पिय के घर जाना होगा
मात-पिता की ममता तज कर
पिय से स्नेह लगाना होगा

देख द्वार पर खडे बराती सग कहारो की ले डोली
ओढ चुनरिया चल दे चातुर इस घर के है लोग बिराने
पिया आ गये तुझे बुलाने

लटका ले झूमर ललाट पर
चमका ले माथे पर बिदिया
आज पर्व है पिया-मिलन का
बजा - बजा पग की पायलिया

सुरभित सुमनो के गजरो से महका ले माटी के तन को
पावन गगा जल से धो ले आज अधर तू इसी बहाने
पिया आ गये तुझे बुलाने

44Books.com

पिय के घर जाने ही को तो
तेरा जन्म हुआ इस घर मे
काट सका है कौन जिन्दगी
अपनी सुख से इस पीहर मे

उठ पैरो मे लगा महावर भर ले माँग सिँदूर बावरी
सदा सुहागिन के समान तू चल उस घर मे दीप जलाने
पिया आ गये तुझे बुलाने

वहाँ पहुँच कर फिर इस घर का
मोह न तुझको भरमायेगा
कौन मात है कौन पिता है
याद न क्षण भर को आयेगा

सच्चे सुख का अनुभव होगा झूठा यह ससार लगेगा
अत प्रतीक्षा अधिक न करके चल प्रियतम से स्नेह लगाने
पिया आ गये तुझे बुलाने

44Books.com

होली का त्योहार प्रिये

एक वर्ष के बाद आज फिर तुमको गले लगाऊँगा
मधुर मिलन की आस और फिर होली का त्योहार प्रिये

अरमानो का मेला है लग रहा हृदय के आँगन मे
देखे क्या मन भाये तुमको आज रँगीले फागुन मे
मै तो बिना मूल्य के सारा सौदा तुम्हे चुकाऊँगा
उर के यह उद्‌गार और फिर मुझको तुमसे प्यार प्रिये

आशा की मदिरा पीकर मै जाने कब से झूम रहा
आज तुम्हारी गलियो मे मदमत्त बना सा घूम रहा
अपनी मधुशाला का मै तो साकी तुम्हे बनाऊँगा
मन की यह अभिलाप और फिर तुमसे मधुर बहार प्रिये

अगर पिला दो नयनो से तो जाम न हाथो मे लूँगा
भरे हुए मदिरा के प्याले सच कहता ठुकरा दूँगा
भले घटाएँ घेरे आकर नजरे नही उठाऊगा
जग से मेरी जीत और फिर तुमसे होगी हार प्रिये

44Books.com

भिगो दिया है मुझे तुम्हारे दरवाजे रँग वालो ने
जाने क्या-क्या कहा मुझे इन होली के मतवालो ने
अब तो बद किवाड खोल दो तन के वस्त्र सुखाऊँगा
काँप रहा है गात और फिर पडती रँग की मार प्रिये

भोली बातो से समझाऊँ कैसे इन मतवालो को
नही लूटने आया हूँ मै मदिर और शिवालो को
मुझे आरती करने दो श्रद्धा के फूल चढाऊँगा
इधर बावरे नयन, उधर है कर मे पूजा थार प्रिये

भावो की भावुकता मे वह कर आया तव द्वार प्रिये
कई बार देखा सपनो मे करते तुमको प्यार प्रिये
गीत सलोने तुम्हे सुना कर खोयी निधि पा जाऊँगा
उर मे यह विश्वास और फिर इनसे तुम्हे दुलार प्रिये

44Books.com

काजल

बचपन

मैने वे दिन भी देखे है
जब नयन तुम्हारे काजल अधिक लगाते थे
पर चितवन का उनको था कुछ भी बोध नही
निस्वार्थ प्रेम मृदुहास और आकर्षण था
जिस ओर झुके कर लिया उसी उर को वश में
मादक प्यालो की छाया उन पर पडी न थी
फिर भी उनमे मादकता थी पावन मधु था
जिसने वह अमृत पिया नयन के प्यालो का
प्रौढावस्था मे भी नवजीवन लहराया
विरहाग्नि नही थी और न उनमे सावन घन
जब कभी अश्रु के बिन्दु ढुलक कर कहते थे
उर सागर के गहरे तल से निकली इन सीपो के
हम वेश कीमती काले रंग के मोती है
मूल्याकन कर सकते है इनका वे ही जन
जो गोदी मे अपने रहते हो लाल लिये

44Books.com

यौवन

अब आँख तुम्हारी फिरी
नयन का काजल भी बारीक हो उठा
चितवन मे आ गया अधिक कुछ चचलपन
जिस ओर निहारा प्रेम वासना उमड पडी
हो गये निडर, नखरीले, चचल, चपल नयन
निस्वार्थ प्रेम अँगडाई लेकर विदा हुआ
अलको ने बन्दी बना किसी का स्वार्थ प्रेम
पलको के वन्दीगृह मे उसे निवास दिया
क्षण भर तो कली खिली जीवन के उपवन मे
पर भ्रमर सकुचित मधु पीकर मदमत्त हुआ
जा बैठा और किसी डाली पर इठला कर
कलिका कुम्हलायी और बसती यौवन जब
मिल गया धूल मे तो विरहाग्नि उठी
ज्वाला की लपटो से तन झुलस गया
था नयनो का यह दोष और उस काजल का
जिसकी चितवन से मन मे अन्तर्द्वन्द हुआ
जिस उर से उमडा प्रेम वेदना फूट पडी
सावन-भादो के मेघ नयन में मँडराये
कलुपित काजल बह चला विरह का बाँध तोड
जब लगी कालिमा उसकी ही अपने मुख पर
तब नयन खुले

44Books.com

वृद्धापन

जब नयन खुले अन्तर के
चितवन धुँधलाई
तब तुमने मायाजाल देखने को जग का
फिर कलुषित काजल का नयनो पर लेप किया
जग ने हँस कर जब इस काजल पर व्यग किया
तब तुमने काजल की परिभाषा उसको समझा दी
बचपन, यौवन, वृद्धापन मे उसकी उत्तमता बतला दी
चन्दा मे काजल की कालिख फिर भी उज्ज्वल
इसलिए कि वह जग एक दृष्टि से देख रहा
चितवन मे जिसके चचलपन है नही
किन्तु स्थिरता है
जिसका धरती के कण-कण से
चल-अचल और जड-चेतन से
सबसे ही प्यार बराबर है
तुम भी काजल नयनो मे दे तीनो पन मे
यदि एक दृष्टि से देखो सारी दुनिया को
तो काजल कालिख नही लगायेगा मुख पर
देगा नयनो मे ज्योति और ज्योतिर्मय जीवन

44Books.com

नहीं तो फिर क्या है

मेरे गीतो को छिप-छिप कर क्यो गाते हो
यदि मुझसे तुमको प्यार नही तो फिर क्या है

मैं जिस क्षण लिखता गीत हृदय की पीडा के
तुम बादल बन नयनो से पीर बहा जाते
मे जितनी कोशिश करता तुम्हे भुलाने की
तुम उतनी-उतनी बार ध्यान मे आ जाते

मनमानी करते रहते हो तुम निडर बने
मेरे मन पर अधिकार जमाये रहते हो
मेरी वीणा पर अपने स्वर लहराते हो
यदि मुझसे तुमको प्यार नही तो फिर क्या है

मै चन्दा की बारात देखता रहता हूँ
जब नील-गगन के नीचे दुनिया सोती है
मै कोमल उर व्याकुल हो जाता पीडा से
जब विरहिन कोई फूट-फूट कर रोती है

44Books.com

उस अन्त प्रहर मे पवन थपकियाँ दे-देकर
अलसायी आँखो को विश्राम दिला देता
तब सपनो मे आकर क्यो रहस रचाते हो
यदि मुझसे तुमको प्यार नही तो फिर क्या है

मै गीत सुनाता हूँ जब कभी रकीबो को
उनके दिल मे बिजलियाँ कौधने लग जाती
मै गीत सुनाता हूँ जब कभी फकीरो को
उनकी सोई आशाएँ तक है जग जाती

जब कभी अकेले मे तन्मय हो गाता हूँ
दीवाले ही सुनती है केवल करुण कथा
उस क्षण क्यो खडे क्षितिज पर मुझे बुलाते हो
यदि मुझसे तुमको प्यार नही तो फिर क्या है

मेरे गीतो मे भाव तुम्हारे प्रतिबिम्बित
हर कडी गीत का रूप तुम्हारा झलकाती
उर के इस खारे सागर मे रक्खा है क्या
तव प्रीत सिन्धु को मथ कर मोती उपजाती

इन पर अधिकार तुम्हारा है मै कहता हूँ
इनमे शृगार तुम्हारा है जग बतलाता
है पूर्व जन्म का साथ तभी शरमाते हो
यदि मुझसे तुमको प्यार नही तो फिर क्या है

44Books.com

पुकारते रहे

हम पुकारते रहे दुख भरी पुकार मे
पथ निहारते रहे रोज इन्तजार मे

पर तुम्हे न पा सके
न मन-सुमन खिला सके
कलपती रही कली
न बेकली मिटा सके

अर्घ्य आरती लिये सँवारते रहे दिये
बुझ गये उन्हे न फिर जला सके बयार मे

स्नेह सिधु मे पले
अश्रु बिदु बह चले
एक - एक कर सभी
रत्न धूल मे मिले

और तुम छिपे - छिपे
बहार देखते रहे
दूर मे अटूट अश्रु
धार देखते रहे

44Books.com

पास तक न आ सके न धैर्य ही बँधा सके
तीन मजिला मकान ढह गया फुहार मे

देह की दुकान मे
बिक रहा विकार था
रूप रग मे रँगा
बाहरी शृंगार था
ठाठ-बाट देखकर
चार चोर घुस पडे
और हम ठगे-ठगे
दुकान पर रहे खडे
पास के दुकानदार दृश्य देखते रहे
और यह दुकान लुट गयी भरे बजार मे

खेत सब बिगड गया
घर बसा उजड गया
सास के किनार तोड
रूप हम उड गया
तुम दुल्हन व पालकी
कहार देखते रहे
नशा उतर गया मगर
खुमार देखते रहे
और यह युगल नयन अखीर तक खुले-खुले
खोजते तुम्हे रहे कफन के तार-तार मं

44Books.com

रोम - रोम मे रमे
पर समझ सके नही
पारखी बहुत बने
पर परख सके नही
आँख पर पडा हुआ
हटा सके न आवरण
सामने खडे रहे
मगर न पा सके शरण

दीप तो जले मगर न ज्योति उर जला सके
ज्ञान के किवार खुल सके न अधकार मे

44Books.com

सुगन्धि के कण

पकज जी की कविताओ मे सरलता और गेयता कल्पनाये रगीन और चित्रात्मक है ।

—प० कमलापति त्रिपाठी

पकज जी के सहज सस्कार उदात्त है । —डा० भगीरथ मिश्र

पकज जी एक सफल कवि है । —नीरज

हिन्दी के उदीयमान कवियो मे पकज जी की गणना प्रोढवर्ग मे होनी चाहिए । —डा० प्रेम नारायण टडन

पकज जी हिन्दी जगत मे शीघ्र ही लोकप्रिय बन जायेगे ।

—स्व० प० रूप नारायण पान्डे

पकज जी सगीतज्ञ है जिसका प्रभाव उनकी कविता पर है ।

—श्री आदर्श कुमार वर्मा. सम्पादक 'दी पीपुल'

पकज जी मे गेयता और भाषागत सरलता अपनी विशेषता है ।

श्री लल्लन प्रसाद व्यास 'स्वतन्त्र भारत'

पकज जी का भविष्य उज्जवल है ।

—सम्पादक 'उत्तर प्रदेश पचायती राज्य'

आकाशवाणी लखनऊ द्वारा आयोजित दिनाक २९ अक्तूबर १९५८ की कवि गोष्ठी मे पकज जी ने अपनी सहेजी हुई प्रेम की बूदे टपका दी । —विशेष प्रतिनिधि 'स्वतन्त्र भारत'

पकज जी की रचनाओ ने सर्वसाधारण के हृदयो को छूने का सफल प्रयत्न किया है । —श्री सत्य नारायण पाण्डेय

पकज जी मे मौज, मस्ती, विचार और ध्येय भी है ।

—श्री वृन्दावन लाल वर्मा

44Books.com

पंकज जी की अन्य रचनाएँ

रोम

नहीं आती है

जाने क्या बात है, जाने क्या राज है, नीद नही आती है। कारण खोजना हो तो पकज जी की कविताओ का यह सकलन अवश्य पढे। मूल्य १-५० न० पै०।

हजरतगंज की सैर

लखनऊ के हजरतगज की सैर तो आपने की होगी पर पकज जी के साथ नही। आइये उनके साथ एक चक्कर लगाये। अरे! यह तो सभी दृश्य नए है। मूल्य २५ न० पै०।

शीघ्र प्रकाशित होने वाली रचनाएँ

चित्रकूट

चित्रकूट की मनोरम झलकियाँ यदि आप घर बैठे लेना चाहते हो तो इस खण्ड काव्य के प्रकाशित होने की प्रतीक्षा करे।

अभी सुबह के चार बजे है

आप कवि हो, लेखक हो, चित्रकार हो, पुलिस के दरोगा हो, कोई भी क्यो न हो, सुबह के चार बजे नही उठते, पर क्यो? आपने इसका जो कारण पकज जी को बतलाया है उसे पुस्तक मे पढने की प्रतीक्षा करे।

सुकृति साहित्य प्रकाशन

१०५/३, प्रेमनगर, कानपुर

44Books.com

हिन्दी के लब्ध प्रतिष्ठित कवि श्री जगदीश प्रसाद सक्सेना 'पंकज' का यह द्वितीय काव्य-संकलन पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने में हमें हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। इस संकलन की अधिकतर रचनायें आकाशवाणी द्वारा प्रसारित हो चुकी हैं और लोकप्रिय हैं। पंकज जी का प्रथम संकलन 'नींद नहीं आती है' पाठकों ने अपनाया इसके लिये मैं उनका आभारी हूं। इस कृति का द्वितीय संस्करण प्रकाशन में है। पाठकों को यह जानकर और भी प्रसन्नता होगी कि पंकज जी ने काव्य धारा में बहकर एक ऐसे मोती को प्राप्त किया है जो उपन्यास के रूप में हिन्दी जगत के समक्ष अति शीघ्र आने वाला है। पंकज जी के साहित्य से हिन्दी जगत लाभान्वित होता रहे यही मेरी शुभ कामना है—

प्रकाशक